(मासिक)

ज्ञानामृत

वर्ष 50, अंक 6, दिसंबर, 2014
मूल्य 8.50 रुपये, वार्षिक शुल्क 100 रुपये

बेतमचेर्ला (करनूल)- नवनिर्मित भवन 'आनन्द सरोवर' के उद्घाटन अवसर पर मंचासीन हैं ब्र.कु.रमेश शाह, ब्र.कु. मृत्युंजय भाई, ब्र.कु. अम्बिका बहन, ब्र.कु. मंजू बहन, ब्र.कु. पुष्पा बहन, ब्र.कु. संजीवय्या भाई एवं ब्र.कु. लक्ष्मीदेवी।

1.आगरा (म्यूजियम)- उ.प्र.के मुख्यमंत्री भ्राता अखिलेश यादव को ईश्वरीय सौगात देते हुए ब्र.कु.मधु बहन। साथ में ब्र.कु. माला बहन एवं राखी बहन।

2.अहमदनगर- केन्द्रीय यातायात मंत्री भ्राता नितिन गडकरी को १०० प्रकार के फूलों के गुलदस्ते द्वारा 'भगवान धरती पर आ चुके हैं' सन्देश देते हुए ब्र.कु.राजेश्वरी बहन तथा ब्र.कु.दीपक भाई।

3.कोहिमा- नागालैण्ड के मुख्यमंत्री भ्राता टी.आर. जेलियांग को ईश्वरीय सौगात देते हुए ब्र.कु.रूपा बहन।

4.बुटवल (नेपाल)- नेपाल के गृहमंत्री भ्राता वामदेव गौतम को ईश्वरीय सौगात देते हुए ब्र.कु.कमला बहन।

5.दिल्ली (बख्तावरपुर)- केन्द्रीय कृषिमंत्री भ्राता राधा मोहन सिंह को ईश्वरीय सौगात देते हुए ब्र.कु.गीता बहन।

6.लखनऊ (गोमतीनगर)- 'कर्मों का लेखा-जोखा' विषयक कार्यक्रम का उद्घाटन करते हुए बहन सुरभी रंजन, मुख्य सचिव भ्राता आलोक रंजन, ब्र.कु.शिवानी बहन, ब्र.कु.राधा बहन तथा अन्य।

7.भुवनेश्वर- उड़ीसा के मुख्य सचिव भ्राता जी.सी.पति को ईश्वरीय सन्देश देते हुए ब्र.कु.लीना बहन। ब्र.कु.विजय भाई तथा ब्र.कु.संयुक्ता बहन साथ में हैं।

8.कल्यानपुर-कानपुर- शाश्वत यौगिक खेती चित्र प्रदर्शनी का उद्घाटन करते हुए उत्तर प्रदेश के कृषि एवं शिक्षा राज्यमंत्री भ्राता राजीव कुमार सिंह, चन्द्रशेखर आजाद कृषि एवं प्रौद्योगिकी विश्वविद्यालय के कुलपति प्रो.मुन्ना सिंह, ब्र.कु.नीलम बहन, ब्र.कु.सविता बहन तथा अन्य।

9. मुजफ्फर नगर (केशव पुरी) - चैतन्य देवियों की झांकी का उद्घाटन करते हुए केन्द्रीय कृषि राज्य मंत्री डॉ. संजीव बालियान, मजिस्ट्रेट भ्राता बृजबिहारी पांडे, पुलिस अधीक्षक भ्राता श्रवण कुमार, ब्र.कु. जयन्ती बहन एवं अन्य समूह चित्र में।

संजय की कलम से ...

सरल स्वभाव

सरल स्वभाव वाला मनुष्य बाहर-भीतर या मनसा-वाचा-कर्मणा से एक-जैसा होता है। उसके मन में एक और बाहर में दूसरी बात नहीं होती। वह बनावट, छल-कपट या कुटिलता से व्यवहार नहीं करता इसलिए लोग उससे निश्चिंत रहते हैं और उसकी सच्ची-सच्ची, भोली-भोली बातें प्यारी लगती हैं। ऐसा व्यक्ति यदि कोई ऐसी बात भी कह दे जो लोगों को पसंद न हो तो भी वे उससे इतना नाराज़ नहीं होते जितना छल-कपट वाले से क्योंकि वे जानते हैं कि इस मनुष्य का मन साफ है, इसने हमसे धोखा करने या हमें गिराने के विचार से ऐसा नहीं कहा बल्कि हमारे बारे में जो कुछ इसका विचार था, इसने उसे सीधेपन और सादगी से कह दिया है। यदि वे थोड़े समय के लिए उसकी किसी बात से नाराज़गी प्रकट करें भी तो थोड़ी देर के बाद उनका मन अन्दर से उन्हें कहता है – ''ऐसे सीधे और सच्चे आदमी से नाराज़ होना या उससे कुछ बुरा कहना ठीक बात नहीं है।'' अत: वे शीघ्र ही और स्वत: ही फिर उससे स्नेह जोड़ लेते हैं क्योंकि उसकी सरलता, सच्चाई, मन की सफाई तथा भोलापन उन्हें आकर्षित करता है।

जैसे सरल स्वभाव वाले व्यक्ति से दूसरे सन्तुष्ट रहते हैं, वैसे सरल स्वभाव वाला मनुष्य स्वयं सन्तुष्ट रहता है। यदि किसी कारण से उसके मन में किसी प्रकार की असन्तुष्टता आये भी, तो भी थोड़ा ही समझाए जाने पर वह अपने सरल स्वभाव के कारण जल्दी ही सन्तुष्ट हो जाता है। परन्तु टेढ़े स्वभाव वाला मनुष्य दूसरे की बात में, चाहे वह अच्छे भाव से तथा उसके कल्याण के लिए ही कही गई हो, यह देखता रहता है कि इसमें कोई छल या कपट या बनावट तो नहीं है? इस प्रकार वह अपने ही कल्याण के बारे में लोगों से कोई बात सुनने पर भी उस बात को पवित्र हृदय से ग्रहण नहीं करता। इसलिए उसके जीवन में अथवा संस्कारों में जल्दी परिवर्तन नहीं आता।

सरल व्यक्ति का मन साफ होने के कारण उसमें दूसरे दिव्य गुणों की धारणा भी जल्दी हो जाती है जबकि कपटी अथवा चालाक व्यक्ति के जीवन में दिव्य गुणों की धारणा इतनी जल्दी नहीं होती क्योंकि उसका मन किसी-न-किसी उधेड़बुन में लगा रहता है। कभी वह सोचता है, ''भूतकाल में उस मनुष्य ने मेरे साथ अच्छा व्यवहार नहीं किया था, अब मेरे साथ अच्छाई कैसे कर सकता है अथवा आज तक फलाँ मनुष्य ठीक नहीं है, वह भविष्य में भी बदलने वाला दिखाई नहीं देता!'' परन्तु जो सरल-चित्त व्यक्ति होता है, वह तो अपनी मस्ती में मस्त रहता है और यही सोचता है कि जैसा कोई करेगा, वैसा पायेगा। वह अपनी सत्यता को किसी भी हालत में नहीं छोड़ता। इसलिए, ''सच्चे दिल पर साहिब राज़ी'' होने की उक्ति के अनुसार उसे ईश्वर से सहायता भी मिलती है। उसके सीधेपन, उसकी सच्चाई तथा मन की सफाई के कारण दूसरे लोग भी उसे आशीर्वाद देते तथा उससे स्नेह करते हैं। अत: वह अपने-आपसे भी सन्तुष्ट और सुखी रहता है।

❋ अमृत-सूची ❋

◈ दुख-सुख हैं कर्मजन्य *(सम्पादकीय)* 4
◈ जीवन जीने की कला 6
◈ ज्ञानामृत महिमा *(कविता)* 9
◈ 'पत्र' संपादक के नाम 10
◈ ईश्वरीय कारोबार में...........11
◈ श्रद्धांजलि 14
◈ खामोश बेशक हूँ *(कविता)* 14
◈ जीवन रक्षक बैज 15
◈ सार्वभौमिक बंधुत्व 16
◈ परमात्मा परमशिक्षक के रूप ..19
◈ जब बाबा ऑटो में साथ 21
◈ युद्ध कर और विजयी बन 22
◈ विश्व बंधुत्व दिवस पर........24
◈ ज़िन्दगी आसान है *(कविता)* ...25
◈ बाबा ने बनाया सहनशील 26
◈ विकार का अनछुआ..........27
◈ तबादला रद्द हो गया 28
◈ अहंकार का बोझ 29
◈ सचित्र सेवा समाचार 30
◈ फसल पर योग का प्रभाव......32

सदस्यता शुल्क

भारत	वार्षिक	आजीवन
ज्ञानामृत	100 /-	2,000/-
वर्ल्ड रिन्युअल	100/-	2,000/-
विदेश		
ज्ञानामृत	1,000 /-	10,000/-
वर्ल्ड रिन्युअल	1,000/-	10,000/-

शुल्क केवल 'ज्ञानामृत' अथवा 'द वर्ल्ड रिन्युअल' के नाम से ड्राफ्ट या मनीऑर्डर द्वारा भेजने हेतु पता है- संपादक, ओमशान्ति प्रिंटिंग प्रेस, ज्ञानामृत भवन, **शान्तिवन- 307510 (आबू रोड) राजस्थान।**

शुल्क के लिए सम्पर्क करें -
09414006904, 09414423949
hindigyanamrit@gmail.com

सम्पादकीय ..

दुख-सुख हैं कर्मजन्य

हर मानव जीवन में पल-पल दुख-सुख का अनुभव करता है। दुख और सुख कर्मजन्य हैं। जब तक मानव कर्मों को न सुधारे तब तक दुख से छुटकारा और सुख की प्राप्ति हो नहीं सकती। कइयों की मान्यता होती है कि दुख-सुख परमात्मा ही देते हैं। ऐसा कहने वाले लोग, दुख आने पर उससे छुड़ाने की प्रार्थना भी परमात्मा से करते हैं। वही परमात्मा दुख देने वाला भी और फिर छुड़ाने वाला भी – यह कैसे हो सकता है। भगवान दुखहर्त्ता हैं, यह तो ठीक है पर भगवान दुखकर्त्ता – यह कहना तो सरासर अज्ञान है।

कर और पा

परमात्मा सुखदाता अवश्य हैं परन्तु कर्म के सिद्धान्तों के अनुसार ही सुख देते हैं। लोग उनसे कृपा मांगते हैं, कृपा शब्द का अर्थ है 'कर' और 'पा' अर्थात् कर्म करके ही फल पाया जा सकता है। कई लोगों की मान्यता है कि ज्ञान द्वारा जीवन में सुख की प्राप्ति होती है इसलिए वे ज्ञान लेने का पुरुषार्थ करते हैं परन्तु जब कर्म और आचरण में ज्ञान उतरे और हमारे कर्म सुकर्म बनें तभी सुख मिल सकता है।

खोटे कर्मों का फल

आजकल छोटी आयु में मृत्यु (अकालमृत्यु) और भयंकर बीमारियों का दौर चल रहा है। यह भी मानव के खोटे कर्मों का ही फल है। हम जानते हैं कि यदि कोई व्यक्ति किसी के प्रति घातक हिंसा का व्यवहार करता है या देशद्रोह आदि करता है तो कानून के अनुसार सरकार उसे मौत का दण्ड देती है। इसी प्रकार रोग, दुर्घटना आदि के द्वारा मानव की जो अकाल मृत्यु होती है वह भी ईश्वरीय सरकार के कानूनों के विरुद्ध आचरण का फल है। यदि मानव इस लोक में श्रेष्ठ कर्म करे और काम-क्रोधादि विकारों के वश होकर विकर्म ना करे तो उसे इस प्रकार का दण्ड नहीं भोगना पड़ेगा।

कर्म आगे आकर खड़ा हो जाता है

इस संसार में यदि हमने ऐसे कर्म किए हैं जिनसे लोगों के तन, मन, धन और जन को नुकसान पहुँचा है तो फल रूप हमसे भी ये छिन जाएँगे। छीनने वाले का सब छिन जाता है, लूटने वाले का सब लुट जाता है और मिटाने वाले का अपना भी मिट जाता है। किया हुआ कर्म कभी निष्फल नहीं जाता, अपना फल लेकर सामने आता ज़रूर है। कबीरदास जी ने कहा है,

कबीर करनी अपनी कबहु न निष्फल जाए।
सात समुद्र आड़ा पड़े, मिले अगाऊ आए।।

भावार्थ है कि चाहे सात समुद्र भी कर्म के फल को रोकने की कोशिश करें तो भी वह आगे आकर खड़ा हो जाता है। मानव का सबसे बड़ा साथी उसका कर्म है। वह वस्तु, व्यक्ति से पीछा छुड़ा सकता है पर कर्म से नहीं।

कुत्सित मनोरंजन

कई बार कोई ट्रेन 10 घण्टे भी लेट हो जाती है। कई तकनीकी कारणों के साथ-साथ कई बार मानवीय कारण भी बन जाते हैं। कई बार कोई नौजवान ट्रेन की चेन खींचकर भाग जाता है। पुलिस पीछे भागती है, वह खेतों में से छिपकर ओझल हो जाता है, ऐसा वह केवल मनोरंजन के लिए करता है। अब देखिए, किसी व्यक्ति के कुत्सित मनोरंजन के कारण ट्रेन कई घण्टे खड़ी रही। उसमें कई बीमार थे जिन्हें त्वरित उपचार की ज़रूरत थी। कई विद्यार्थी थे जिनका परीक्षा-हॉल में प्रवेश होने का समय निकल गया। कई लम्बी यात्रा वाले यात्री थे जिनकी अगली ट्रेन निकल गई। इन सब यात्रियों को जो मुसीबतें झेलनी पड़ीं, सबका भार उस अकेले नौजवान पर आ गया जिसने ऐसा कर्म किया। इन सारे कर्मों का और जीवन भर में किए गए ऐसे और भी कर्मों का इकट्ठा फल जब सामने आएगा तो ये बातें याद थोड़े ही रहेंगी कि मेरे कारण कितने लोगों को क्या-क्या तकलीफें हुई थीं। कहने का अर्थ यही है कि जो कर्म रूपी बीज बोते समय असावधान होता है वह फल सामने आने पर दुख और पश्चाताप का सामना करता है।

दूसरों का घाटा किया तो झेलना भी पड़ेगा

ऐसे बहुत मनुष्य मिलेंगे जिन पर चारों तरफ से मुसीबतों का पहाड़ टूट पड़ता है। उदाहरण के लिए, एक व्यक्ति के पास पूर्वजों की दी कोई सम्पत्ति भी नहीं है, रोज़गार का साधन भी नहीं है, पढ़ा-लिखा भी नहीं है, शरीर को रोग भी है, घर में बच्चे भूखे हैं, बच्चों की माँ रोग में तड़प-तड़प कर शरीर छोड़ चुकी है। कहने का भाव यह है कि तन, मन, धन और जन – चारों में से एक भी सुख की प्राप्ति उसे नहीं है। देखने वाले सोचते हैं, यह ऐसा क्या बीज बोकर आया है जो इसके भाग्य में कहीं भी जमा नहीं है, सर्वत्र घाटा ही घाटा है। अवश्य ही उसने कइयों का कई प्रकार से घाटा किया तो उसे भी कई प्रकार का घाटा झेलना पड़ रहा है जिस प्रकार का हमने ऊपर उदाहरण लिया।

जमा करें पुण्यों को

पूर्व के कर्मों अनुसार यदि हमें निरोगी तन, खूब धन, अच्छे सम्बन्ध मिल भी गए पर मन आवारागर्दी करता है तो पिछले खाते को खत्म होते देर नहीं लगती। किसी के यहाँ गोदाम में कितना भी अनाज भरा हो, यदि वह और खेती न करे तो गोदाम को खत्म होते देर नहीं लगती। अत: पूर्वजन्म में किए के फल को पाकर इतराएँ नहीं वरन् भविष्य के लिए पुण्य के बीज भी बोएँ। जैसे हम भविष्य में काम आने के लिए धन को जमा करके रखते हैं इसी प्रकार भविष्य में काम आने के लिए पुण्यों को भी जमा करें।

विकल्प और विकर्म

मनसा, वाचा, कर्मणा – तीनों प्रकार से पाप कर्म होते हैं। किसी भी विकार – काम, क्रोध, लोभ, मोह, अहंकार, ईर्ष्या, द्वेष, बदले की भावना, नफरत आदि के वशीभूत होकर जो संकल्प चलते हैं उन्हें विकल्प कहा जाता है और इन विकारों के वशीभूत जो कर्म हो जाते हैं उन्हें विकर्म कहते हैं। मान लीजिए, घर में बच्चा उधम मचा रहा है और माँ को क्रोध आता है तो इस क्रोध के विचार को विकल्प कहा जाएगा। पर यदि क्रोधवश वह बच्चे को कटु शब्द बोले या पिटाई कर दे तो उसके इस कर्म को विकर्म कहा जाएगा। विकार यदि संकल्प तक रहे तो उसे विकल्प कहते हैं। यदि वह वाणी और कर्म में आ जाए तो विकर्म बन जाता है।

ज्ञान – पेट भरने के लिए या पवित्र बनने के लिए

सत्कर्म करने का आधार है श्रेष्ठ संकल्प। संकल्प श्रेष्ठ बनाने के लिए सद्ज्ञान, ईश्वरीय ज्ञान चाहिए। वर्तमान समय संसार में जो ज्ञान है वह या तो पेट भरने के लिए काम में लाया जा रहा है या पद, नाम, कीर्ति पाने अर्थ उपयोग में लाया जा रहा है। ज्ञान का प्रयोग विकारों के नाश या पवित्रता की प्राप्ति के लिए तो बहुत कम हो रहा है। पापों से बचने का एकमात्र उपाय यह है कि हम ईश्वरीय ज्ञान का प्रयोग मन को निर्विकार बनाने में करें। प्रतिदिन रात को सोने से पहले अपने से पूछें, आज मैं कितना पवित्र रहा? काम, क्रोध, लोभ, मोह, अहंकार इन भूतों के पंजों में कितना फंसा? जब ईश्वरीय ज्ञान के आधार पर प्रतिदिन, प्रतिपल आत्ममंथन करेंगे तब विकारों और विकर्मों से बच सकेंगे। जब पापों से बचेंगे तो पापकर्मों के फल से भी बचेंगे और सदा सुखी रह सकेंगे।

दुखोत्पादक कर्मों का त्याग करें

कई लोग कहते हैं, दुख को दुख मानो ही मत। परन्तु यह कोई सिद्धि नहीं है। जीवन में रोग, अकालमृत्यु, गरीबी, कलह-क्लेश आएँ और हम मानें ही नहीं, यह भला कैसे हो सकता है। दुख की परिस्थितियाँ होंगी तो मन को हिलाएंगी भी। हमें यह सीखना है कि दुख का सामना ज्ञानपूर्वक करें। जिन कर्मों के परिणामरूप दुख उत्पन्न होता है उन कर्मों को बदल दें, त्याग दें। सुख-दुख में सम अवस्था बनी रहने का गहरा अर्थ है। जब हम आध्यात्मिक मार्ग में आगे बढ़ते हैं तो बुराइयाँ हमारा रास्ता रोकेंगी, हमारी शत्रु बनेंगी। उस समय हम उन रुकावटों को, दुखों को दुख ना मानकर आगे बढ़ते रहें। इस मार्ग पर चलने पर कोई हमारी महिमा भी करेगा, उस महिमा को हम स्वीकार न करें। इस प्रकार दुख-सुख दोनों के प्रति साक्षी रह आगे बढ़ते रहें, इसे कहते हैं मन की सम अवस्था।

➤ ब्र.कु. आत्म प्रकाश

जीवन जीने की कला दादी जी से सीखो

ब्रह्माकुमार गोलक,
शान्तिवन

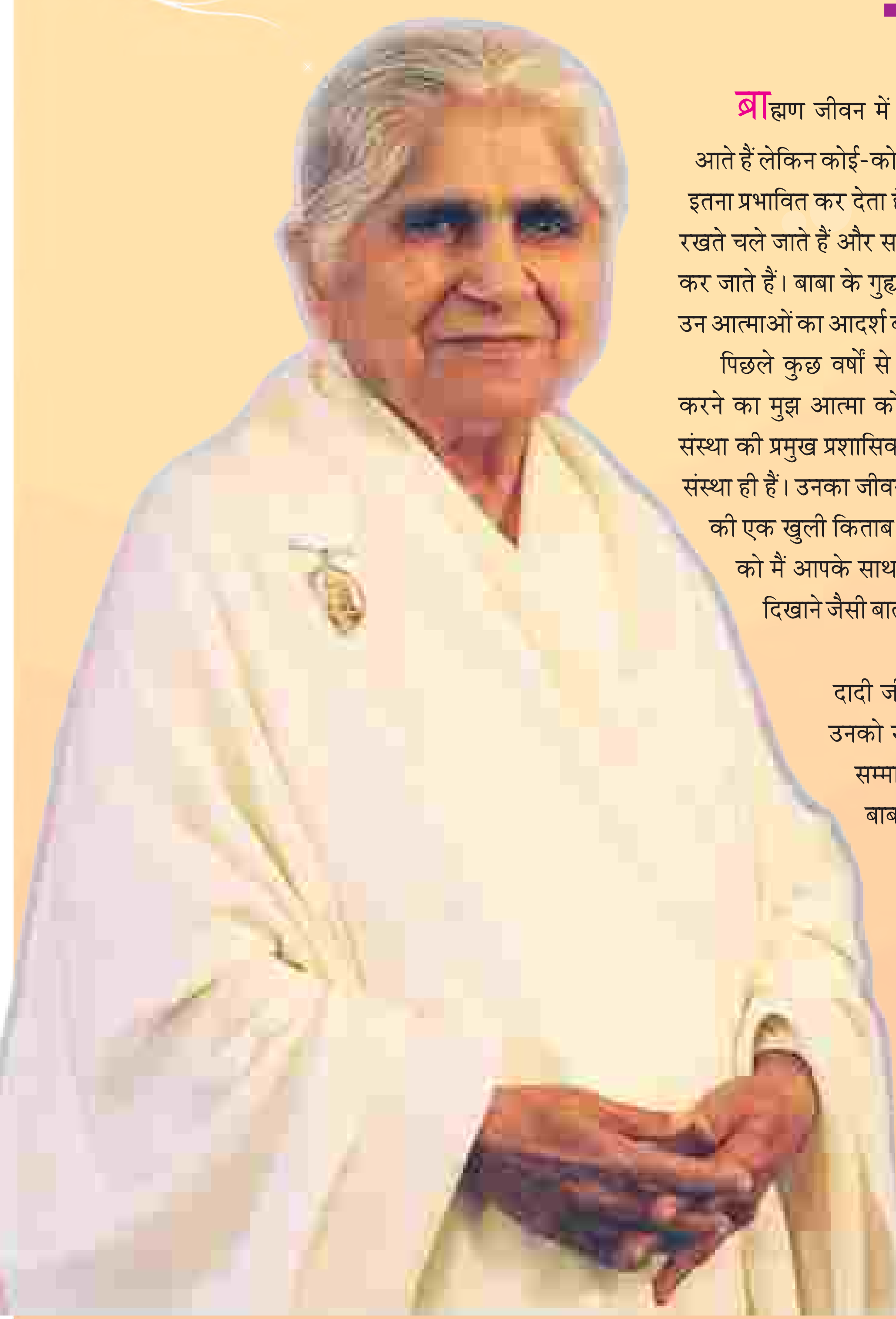

ब्राह्मण जीवन में अनेक आत्माओं के संबंध में हम आते हैं लेकिन कोई-कोई आत्मा का जीवन हमारे जीवन को इतना प्रभावित कर देता है कि हम भी उनके कदम पर कदम रखते चले जाते हैं और सहज ही अपनी श्रेष्ठ मंज़िल को प्राप्त कर जाते हैं। बाबा के गुह्य ज्ञान को व्यवहारिक स्वरूप देने में उन आत्माओं का आदर्श बहुत अनुकरणीय है।

पिछले कुछ वर्षों से दादी जानकी जी की पालना प्राप्त करने का मुझ आत्मा को परम सौभाग्य मिला है। दादी जी संस्था की प्रमुख प्रशासिका होने के साथ-साथ स्वयं भी एक संस्था ही हैं। उनका जीवन ईश्वरीय साधना और सिद्धि प्राप्ति की एक खुली किताब है। उनके साथ के कुछेक अनुभवों को मैं आपके साथ बाँट रहा हूँ जो कि सूर्य को दीपक दिखाने जैसी बात है –

आत्म-सम्मान से भरपूर

दादी जी आत्म-सम्मान से भरपूर हैं। कोई उनको सम्मान दे अथवा न दे, वे स्वयं को सम्मान देने की कला में माहिर हैं इसलिए बाबा सदा उनका सम्मान करते हैं।

बाबा की शिक्षा का साकार स्वरूप

स्व-चिन्तन और स्व-परिवर्तन उनका विशेष लक्ष्य है। कोई करे अथवा न करे, वे अपने इरादों की पक्की हैं। उनके स्लोगन हैं, 'अपनी घोट तो नशा चढ़े' व 'चेरिटी बिगिन्स एट होम।' दादी जी बाबा की शिक्षा का साकार

स्वरूप हैं, हम सबके लिए अनुकरणीय हैं।

निश्छल प्यार की मूरत

कहते हैं, प्यार ही जीवन है और जीवन ही प्यार के लिए है। हमारी दादी जी प्यार की मूरत हैं। उनका प्यार बाबा से है और बाबा ही उनका जीवन है। दादी जी सिर्फ बाबा को प्यार करती हैं और सबको प्यार देती हैं। प्रीत बाबा से लेकिन प्रीत की रीत सबसे निभाती हैं। किसी से कुछ भी प्राप्त करने की चाहना उनमें नहीं है। न वस्तु, न व्यक्ति, न गुण, न अवगुण अपितु इन सबसे परे होकर सबको निश्छल प्यार देना ही उनका कर्म है। न चाहत है, न किसी बात से आहत हैं। गंगा की अविरल धारा जैसी हैं हमारी दादी जी।

समदृष्टि

दादी जी के मन में किसी के प्रति कोई भी प्रकार का भेदभाव नहीं है। सब मेरे बाबा के बच्चे हैं, मेरे भाती हैं। ज्ञानी-अज्ञानी, देशी-विदेशी आदि में कोई अन्तर नहीं है। इस प्रकार आत्मीय भाव से सदा व्यवहार करना और सबको आगे बढ़ाना उनकी रग-रग में समाया हुआ है।

सच्चा दिल

सच्चाई, दादी जी के जीवन का मूलमंत्र है। सच्चे दिल से सबकी सेवा कर, सर्व को सच्चा बनाती हैं। इस आधार से दादी जी ने विश्व में सच्ची आत्माओं को अपना सेवा साथी बनाया है। सच्चे दिल से दिलबर बापदादा के दिल में सदा समाई हुई हैं। सच्चाई-सफाई को आत्मा की पूँजी समझ, खजानों को जमा करने में दादी माहिर हैं। सच तो बिठो नच – बाबा का यह मंत्र उनके जीवन का संगीत है।

एकनामी और एकॉनामी

दादी जी एकनामी और एकॉनामी की बेमिसाल मूरत हैं। यज्ञ साधनों को अपने प्रति कम से कम यूज़ करती हैं और सबको भी ऐसा करने को प्रेरित करती हैं। वे सदा कहती हैं कि साधनों को बाबा की सेवा में यूज करो। साधन के बजाय साधना द्वारा सेवा में सफलता प्राप्त करने का उदाहरण हमारी दादी जी हैं। यज्ञ के बेगरी पार्ट के समय विदेश में जाकर विशाल सेवा का साम्राज्य स्थापन करने की प्रेरणा-स्रोत हमारी दादी जी ही हैं। बाबा-बाबा का नाम जपते-जपते सारे जग को आपने जगा दिया। काँटों के जंगल में कल्प-वृक्ष लगाकर सबको मनवांछित फल खिलाया – यह तो बाबा के नाम की कमाल और हमारी दादी की कमाल है। है ना बिना कौड़ी बादशाह।

विश्वकल्याणी

बेहद की वैराग्यवृत्ति और सर्व का कल्याण हो – यह उनका मुख्य ध्येय है। हर संकल्प में विश्व की आत्माओं का कल्याण समाया है। नज़रों से बाबा के प्यार और शक्ति की वर्षा, मन में सर्व आत्माओं के उद्धार की भावना और हाथों में विश्व सदा समाया हुआ रहता है। उनका हर कर्म अन्य आत्माओं के लिए उदाहरण है। यही उनका विश्व-कल्याणी स्वरूप है।

सदा स्टूडेन्ट लाइफ

पढ़ाई, सिर्फ पढ़ाई। वह भी चारों सब्जेक्ट्स की। सवेरे से रात तक पढ़ना है, सीखना है और सिखाना है, यह उनकी अपनी धुन है। उनको लगता है कि जो मुझको मिला है, वह दूसरों को भी मिले, कोई वंचित रह न जाये।

अथक सेवाधारी

ज्ञान-सेवा या यज्ञ-सेवा के बिना दादी जी रह नहीं सकती। चाहे शारीरिक तकलीफ हो तो भी सेवा से अपने को कभी अलग नहीं करती हैं।

विचार सागर मंथन

दादी जी ऊँचे और श्रेष्ठ विचारों की धनी हैं। सदा ईश्वरीय ज्ञान के चिन्तन एवं सबके साथ उसको शेयर करने में बिजी रहती हैं। विचार सागर मंथन सीखना हो तो दादी जी से सीखो।

पालना देने का अनूठा तरीका

मिलनसार और कुशल व्यवहार से दादी जी दूसरों को

अपना फ्रैण्ड बना लेती हैं। उनकी बात हालचाल पूछते-पूछते शुरू होती है, उसके बाद आपसी विचारों की लेनदेन और ज्ञान की चर्चा। फिर उसे बाबा की तरफ इशारा करती हैं। इस प्रकार की पालना से वह आत्मा बाबा के ज्ञान को सहजता से स्वीकार कर सेवा में एवं पुरुषार्थ में आगे बढ़ जाती है। यह है दादी जी की विज़डम। दूसरों में ज्ञान का बीज डालकर उन्हें स्वावलंबी बनाने की यही विधि है। पहले अंगुली पकड़कर चलाती हैं, जब आत्मा चलने लग जाये तो ठूंगा लगाकर मुक्त आसमान में उड़ा देती हैं। यह उनकी पर्सनल पालना का तरीका है।

दया और क्षमा की मूरत

दया और क्षमा दादी जी के दो अस्त्र हैं जिनका प्रयोग कर माया के वशीभूत आत्माओं को, मनमत और परमत की भूलभूलैया में फँसी हुई आत्माओं को दादी जी सहज ही निकाल लेती हैं। जब दूसरी आत्मायें उसे ठुकराती हैं या नाउम्मीद समझकर उससे किनारा करती हैं, उस समय दादी जी उन्हें क्षमा कर आगे बढ़ाती हैं, ठोकर खाने वाले को ठाकुर बना देती हैं।

वरदानीमूर्त

हो जायेगा, हुआ ही पड़ा है, सब अच्छा है, यज्ञ अच्छा चल रहा है और अच्छा ही चलता रहेगा – ये बाबा के वरदानी बोल सदा दादी जी की स्मृति में रहते हैं। बापदादा द्वारा मिले हुए वरदानों के शब्द सदा उनके कानों में गूंजते रहते हैं। अपनी शक्ति की बजाय बाबा के वरदानों को अपने पुरुषार्थ एवं कर्म में वे ज्यादा यूज़ करती हैं। इससे स्वयं की शक्ति कम खर्च होती है जिससे वे अपने को सदा ऊर्जावान महसूस करती हैं, कभी थकती नहीं हैं। बाबा के वरदानों पर निश्चय से वे सदा निश्चिन्त और फिकर से फ़ारिग रहती हैं। जब हम कभी कोई समस्या लेकर उनके पास जाते हैं, उनके ये वरदानी बोल सुनकर हम अपने को हल्का महसूस करते हैं। सर्व समस्याओं का समाधान बाबा के वरदान हैं और ड्रामा की भावी है। ज़िम्मेदार होते हुए भी बाबा को अपना सब भार सौंप देती हैं। करनकरावनहार अपना कार्य कर रहा है और करा रहा है, मैं तो निमित्त हूँ, इस नशे में रहती हैं। स्वयं और कार्य को बाबा के हवाले कर देती हैं। कर्म करने की इस विधि से सहज ही सर्व सिद्धियाँ मिलती हैं।

निर्बन्धन बनाने की युक्ति

कार्य व्यवहार में अलौकिक जीवन का नशा और बाबा से प्राप्त सर्व खजानों की खुशी में रहकर संबंध निभाना, इससे हम बंधनमुक्त रहेंगे। इससे लौकिक वालों की दृष्टि भी हमारे प्रति बदल जायेगी। ये हमारे नहीं, ईश्वर के मैसेन्जर्स हैं, ये जग के साथ-साथ हमारे भी कल्याण के निमित्त हैं, वे लोग उसी ऊँची भावना से देखेंगे। ऐसी युक्ति सिखाकर आत्माओं को निर्बन्धन और निर्विकारी बनाती हैं।

धैर्य की प्रतिमा

दादी जी धैर्य की प्रतिमा हैं। किसी भी बात या परिस्थिति में विचलित नहीं होती हैं। अगर कोई आत्मा विपरीत या अशुद्ध संस्कार के वशीभूत होकर नाउम्मीदवार बन जाती है तो उनके प्रति निरंतर शुभभावना रखकर पहले से भी अधिक प्यार तब तक देती हैं जब तक वह आत्मा अपने को परिवर्तन नहीं कर लेती, इस विधि में दादी जी सदा ही सफल रही हैं।

सर्व को सम्मान देना

सम्मान देना दादी का कर्म और धर्म है। छोटे-बड़े सर्व का आदर-सत्कार दिल से करती हैं। यज्ञ में कोई भी प्रकार की सेवा करने वाले को रिटर्न देना नहीं भूलती हैं। किसी न किसी रूप से स्वयं द्वारा अथवा अन्यों के द्वारा उसका सम्मान कर, रिटर्न दे ही देती हैं।

सदा एक्टिव और एक्यूरेट

दादी जी सदा एक्टिव और एक्यूरेट हैं। कोई भी सेवा में अपना योगदान देना नहीं भूलती। सेवा के लिए सदा अपने

को ऑफर करती हैं। वह भी दिखावा या कामचलाऊ रूप से नहीं अपितु एक्यूरेट रीति से करती हैं जिसके कारण बाबा सदा उनको आफरीन देते हैं। साथ-साथ एक्टिव होकर अपना कार्य स्वयं करना पसन्द करती हैं। दूसरों से सेवा लेना या सेवा कराना, यह उन्हें पसंद नहीं है। दूसरों से सेवा लेना वह जैसे कि बोझ समझती हैं। अगर कोई दूसरा उनकी सेवा करता है तो उसे सदा अपने से आगे रखती हैं।

निरहंकारिता

इतनी बड़ी संस्था की प्रमुख होते हुए भी वे कभी उस नशे में रहकर कोई कार्य नहीं करती और न ही अपने को मुख्य समझती हैं। सेवा करने वालों को अपने से आगे रखकर, स्वयं उनके पास जाकर, उनकी महिमा करती हैं एवं उनकी सेवाओं की सराहना करती हैं। सेवासाथियों से कुशल मंगल पूछने के लिए उनके सेवास्थानों या उनके कमरे तक पहुँच जाती हैं। पूछने पर कहती हैं, यह तो मेरा फर्ज है। बाबा वतन से हमारा हालचाल पूछने आते हैं तो मैं यहाँ ही अपने भाई-बहनों को पूछने आ गई तो क्या हुआ! ये है उनकी नम्रता और निरहंकारिता जिसके आगे दुनिया झुकती है।

जो करना है, अभी करना है

दादी जी के मन में न तो अतीत का सोच चलता है और न ही भविष्य की कोई चिन्ता रहती है। उनके दिल में रहता है कि जो करना है, अभी करना है। उनका कहना है, जो बीत गया, उसका परिणाम या फल वर्तमान है और जो मैं अभी कर रही हूँ, उससे मेरे भविष्य की प्रालब्ध बनेगी। बीती बातों से सीख लेकर, वर्तमान के श्रेष्ठ कर्म से भविष्य बनाना मेरे हाथ में है। अभी मुझे सब सफल करना है, कल किसने देखा। अभी का सफल हुआ ड्रामा में नूंध हो गया। कल पर रहने वालों को काल भी आँख दिखाता है। भाग्यविधाता भाग्य बाँट रहा है, जितना लूटना है, लूट लो, अपनी झोली भर लो। अब भाग्यविधाता भगवान हमारा भाग्य बना रहा है, फिर धर्मराज हिसाब माँगेगा। ☺

ज्ञानामृत महिमा अमित

ब्रह्माकुमार गोपाल प्रसाद मुद्गल, डीग (भरतपुर)

ज्ञानामृत का आ गया स्वर्ण जयन्ती वर्ष।
इसीलिए चहुँ ओर है हर्ष-हर्ष अति हर्ष।।

बाँट रहा यह ज्ञान का अमृत चारों ओर।
सारा जग सुख पा रहा जिसका ओर न छोर।।

ज्ञानामृत जो पढ़ रहा वह हो रहा निहाल।
कलियुग में भी आ गया उसका स्वर्णिम काल।।

ज्ञानामृत रंग जो रंगा बँधा न वह संसार।
आत्म-ज्ञान उसको हुआ, पहुँचा पहली पार।।

ज्ञानामृत महिमा अमित, को कर सके बखान।
जिसने इसका फल चखा, हुआ गुणी इन्सान।।

ज्ञानामृत के ज्ञान से मिटा घोर अज्ञान।
नशा ज्ञान का चढ़ गया, मिला बाप का ज्ञान।।

ज्ञानामृत पढ़कर हुए मन के शुद्ध विचार।
खानपान भी शुद्ध है, हुआ मधुर व्यवहार।।

ज्ञानामृत का प्रकाशन होते, हो गए वर्ष पचास।
शक्ति और आनंद का हुआ सुखद अहसास।।

ज्ञानामृत में बढ़ रहा जन-जन का विश्वास।
जो जन मन से पढ़ रहा, पाता अति उल्लास।।

‘पत्र’ संपादक के नाम

मेरा प्रशासन संबंधी कार्य होने से मुझे क्रोध बहुत ही ज्यादा आता था। लोगों की बातों से मेरा नियंत्रण खो जाता था लेकिन राजयोग की विधि जानने से तथा ‘ज्ञानामृत’ पढ़ने से दिल-दिमाग अंदर से, बाहर से हलका हो जाता है। क्रोध पर नियंत्रण होने से काम में सहजता और सरलता आयी। बोलने से पहले सोचने की क्षमता विकसित हुई। यह पहले नहीं थी, मैं कुछ भी उटपटांग किसी को भी बोल देता था। मैं क्या बोल रहा हूँ, मुझे खुद को भी पता नहीं रहता था। मैं अपना आपा खो देता था। सेवाकेन्द्र में जाने से, ‘ज्ञानामृत’ पढ़ने से मेरे जीवन में परिवर्तन आया है। मैं अन्तर्मुखी हो गया, कम बोलने लगा, लोगों को अपनी बात समझाने में सफल होने लगा। जो लोग मुझे टाल देते थे वे मुझसे बात करने लगे, मुझसे मित्रतापूर्ण व्यवहार करने लगे। मेरी छवि जो पहले क्रोध वाली थी वह धीरे-धीरे खत्म होने लगी, इसका श्रेय ‘ज्ञानामृत’ को देता हूँ।

बाबा ने कहा है, कम बोलो, धीरे बोलो, मीठा बोलो। इसे जीवन में उतारने से काफी परिवर्तन हुआ है। जो पहले आत्मविश्वास में कमी थी वह दूर हुई है। प्रतिदिन पत्र व्यवहार में काफी गलतियाँ होती थीं उनमें काफी सुधार हुआ है। ‘ज्ञानामृत’ पत्रिका के स्वर्णजयन्ती वर्ष की शुभकामनाएँ प्रदान करता हूँ। यह दवा और दुआ का तथा लोगों के जीवन की उदासी दूर करने का कार्य कर रही है।

– प्रमोद एस.मेश्राम,
ढेर का बालाजी, जयपुर

ज्ञानामृत के द्वारा मेरे आध्यात्मिक ज्ञान में वृद्धि हुई है तथा इसे निरन्तर पढ़ने से जीवन सुखमय हो गया है। पत्रिका का हर लेख मन को मज़बूत बनाता है।

– एन.पी.शर्मा,
सेवानिवृत्त बैंककर्मी, जालन्धर

‘ज्ञानामृत’ ज्ञान प्रदान करने वाली अद्भुत पत्रिका है। प्रतिमास समय पर आने की प्रतीक्षा करता रहता हूँ। इसके सभी लेख प्रशंसनीय होते हैं जिनसे समस्या का निपटारा, उत्तम व्यवहार, मन की ताज़गी, ईश्वरीय प्रेम, मानसिक शान्ति, रोग-शोक-भय से मुक्ति, क्रोध-मोह का समाधान और आत्मा की सुषुप्त शक्तियों का जागरण हो जाता है। ‘ज्ञानामृत’ ने कठिन से कठिन समस्या का समाधान समझाकर सन्तुष्ट किया है। मैं आशा करता हूँ कि यह पत्रिका यूँ ही समाज की सेवा करती रहे।

– चरणसिंह, बड़ौत (बागपत)

अगस्त, 2014 अंक में सम्पादकीय ‘कर्मों का खाता-2’ इतना सटीक, साफ एवं बुद्धिमत्ता से लिखा गया है कि इसकी जितनी तारीफ की जाए कम है। यह आम आदमी के समझने लायक है तथा सत्य की कसौटी पर पूरा-पूरा बैठता है। इसको समझने के बाद इन्सान गलत काम करने से बच सकता है। शिवबाबा आपको इतनी सद्बुद्धि दें कि आप भविष्य में और भी अच्छे लेख लिखें। मानवता की सेवा का यह एक अद्वितीय रास्ता है।

– भूपसिंह जांगडा, सिरसा

सितम्बर, 1 तारीख से 15 तारीख तक महाप्रबंधक दूरसंचार जिला कार्यालय (बी.एस.एन.एल.), बंगाई गाँव (असम) में हिन्दी पखवाड़ा मनाया गया। इसमें हम अहिन्दी भाषी कर्मचारियों ने बढ़-चढ़ कर हिस्सा लिया। हिन्दी दिवस (15 तारीख) के समापन समारोह में हमने ‘ज्ञानामृत’ पत्रिका सभी कर्मचारियों को वितरित की। इसे पढ़कर सभी बड़े खुश हुए और इसके प्रत्येक लेख की काफी सराहना की।

– ब्रह्माकुमार दिलीप कोच,
बंगाई गाँव (असम)

ईश्वरीय कारोबार में आदर्श व्यवस्था संपन्न करने की ज़रूरत – 14

ब्रह्माकुमार रमेश, मुंबई (गामदेवी)

भारतीय संस्कृति में विद्या की परिभाषा है **'सा विद्या या विमुक्तये'** अर्थात् विद्या वह है जिसके द्वारा हमें अपने विकारों एवं कमियों से मुक्ति मिले। भारत के उच्चतम न्यायालय ने एक जजमेन्ट में विद्या की परिभाषा बताई कि विद्या वो है जो चार दीवारों के अन्दर सिखाई जाये। एडम स्मिथ ने विद्या की परिभाषा दी कि विद्या वो है जिसके आधार पर हम कमाई कर अपना और अपने परिवार का जीवन निर्वाह कर सकें। इस बात का परिवर्तन करने के लिए भारत की संसद ने 1986 में एक एज्युकेशन पॉलिसी बनाई और उसमें शिक्षा की नई परिभाषा बनाई जिसमें लिखा है कि विद्या वो है जिसके द्वारा व्यक्ति अपनी भौतिक एवं आध्यात्मिक उन्नति कर सके अर्थात् आध्यात्मिक उन्नति के ज्ञान को भी विद्या कह सकते हैं। विद्या के बारे में अनेक लेखकों ने लिखा हुआ है। एक लेखक ने लिखा है कि बीसवीं सदी में अनपढ़ उसे कहते थे जो लिखना पढ़ना नहीं जानता था परंतु इक्कीसवीं सदी में अनपढ़ उसे कहा जाता है कि पढ़ाई के बाद भी जिस व्यक्ति के कार्य व्यवहार में तथा जीवन में परिवर्तन नहीं होता है। पढ़ाई

का मुख्य लक्ष्य व्यक्ति को जीवन में आने वाली चुनौतियों का सामना करने के योग्य बनाना है।

किसी ने कहा है कि जीवन ऐसे व्यतीत करो जैसे कि आपको कल शरीर छोड़ना है परंतु शिक्षा ऐसे ग्रहण करो कि आपको सौ साल तक जीना है। इसी प्रकार किसी ने कहा है कि भौतिक ज्ञान के द्वारा जीवन निर्वाह कर सकेंगे परंतु आध्यात्मिक ज्ञान के द्वारा सही मायने में जीवन जी सकेंगे अर्थात् आध्यात्मिकता व्यक्ति को जीवन जीने की कला सिखाती है।

आदर्श जीवन व्यवहार एवं ईश्वरीय कारोबार में लक्ष्य का होना बहुत ज़रूरी है। यह लक्ष्य हमारे सामने बहुत ही क्लीयर अर्थात् स्पष्ट होना आवश्यक है। इसे दूसरे शब्दों में कह सकते हैं कि जितना हमारे सामने लक्ष्य स्पष्ट होगा उतना ही हम लक्ष्य प्राप्ति के लिए श्रेष्ठ पुरुषार्थ कर सकेंगे। यह उद्देश्य एवं लक्ष्य कितना स्पष्ट हो सकता है वह शिवबाबा ने साकार ब्रह्मा बाबा को दिव्यदृष्टि के द्वारा स्पष्ट किया। ब्रह्मा बाबा ने जो साक्षात्कार किया उसका स्वयं वर्णन करके बताया। मैं उनकी जो भावना एवं अनुभव है वह तो नहीं लिख सकता परंतु चंद शब्दों में बता रहा हूँ कि पहले तो उन्हें नज़र आया कि खून की नदियाँ बह रही थीं, मनुष्य एक-दूसरे को मारकाट रहे थे तो कहीं बम फट रहे थे, पाँचों तत्वों का रौद्र रूप नजर आ रहा था, इस भयानक दृश्य

को देख ब्रह्मा बाबा डर गये, उसके बाद शिवबाबा ने उन्हें दूसरा दृश्य दिखाया। इस दृश्य में बाबा ने देखा कि आकाश से सितारे धरती पर उतर रहे थे और नीचे आकर वे देवी देवता बन रहे थे। सतयुगी सृष्टि का यह नज़ारा देखने के बाद ब्रह्मा बाबा बहुत खुश हुए। फिर ब्रह्मा बाबा ने आकाशवाणी सुनी कि नई सृष्टि की स्थापना एवं विश्वपरिवर्तन के महान कार्य के लिए उन्हें निमित्त बनना है। ईश्वरीय कार्य क्या है, इसके लिए उन्हें क्यों निमित्त बनाया है, इसका कारोबार कैसे होगा – यह सब बातें शिवबाबा ने शुरूआत में ही स्पष्ट की। मम्मा और बाबा नई दुनिया में श्रीलक्ष्मी-श्रीनारायण बनेंगे इस प्रकार का लक्ष्य उन्हें पुरुषार्थ करने के लिए दिया। इस प्रकार लक्ष्य स्पष्ट होने से हम श्रेष्ठ पुरुषार्थ कर सकते हैं।

जब लक्ष्य स्पष्ट नहीं होता तो मन में दुविधा होती है कि पुरुषार्थ करें या ना करें? महाभारत में जैसे कि दिखाया गया है कि अर्जुन को भी दुविधा हुई कि वह युद्ध करे या ना करे, इस दुविधा के कारण अर्जुन अपने शस्त्र त्याग रथ में बैठ गया। तब श्रीकृष्ण ने अर्जुन को गीता का ज्ञान दिया। श्रीकृष्ण ने अर्जुन को उसका लक्ष्य स्मरण कराया जिससे अर्जुन का मोह भंग हुआ और वह युद्ध के लिए तैयार हुआ।

ऐसे ही पश्चिम की दुनिया में शेक्सपियर ने एक ड्रामा लिखा जिसका नाम है हैमलेट। इस ड्रामा का जो मुख्य पात्र है हैमलेट वह हमेशा दुविधा में रहता है कि करूँ या ना करूँ (To do or not to do) क्योंकि उसके सामने लक्ष्य स्पष्ट नहीं था। लेकिन बाबा ने हम बच्चों के सामने सदा ही हमारा लक्ष्य स्पष्ट रखा है कि हमें नई दुनिया में देवी-देवता बनना है। बाबा ने कहा है कि ऐसे श्रेष्ठ एवं पूज्य पद की प्राप्ति करने के लिए ऐसा श्रेष्ठ पुरुषार्थ करेंगे तो अवश्य ही तुम्हे ऊँच पद मिलेगा।

ज्ञानमार्ग एवं भक्तिमार्ग में यही फर्क है कि भक्तिमार्ग में कोई भी लक्ष्य स्पष्ट नहीं होता है पर ज्ञानमार्ग में लक्ष्य स्पष्ट होता है। उदाहरण के लिए रामगीता (श्रीराम एवं ऋषि वशिष्ठ के बीच का संवाद) में ऋषि वशिष्ठ स्पष्ट कहते हैं कि जीवन में पुरुषार्थ एवं तपस्या के पाँच जन्म के बाद ही मुक्ति मिलती है और इसके दो जन्मों के बाद जीवनमुक्ति मिलेगी। परंतु हम बाबा के ज्ञान के अनुसार जानते हैं कि ब्रह्मा बाबा ने करीब 32 साल पुरुषार्थ किया और सृष्टि रंगमंच पर पहले ऐसे व्यक्ति बने जिन्होंने सम्पूर्णता को प्राप्त किया। इस प्रकार स्पष्ट है कि 32 वर्ष के पुरुषार्थ के आधार पर मुक्ति और जीवनमुक्ति को प्राप्त किया जा सकता है। शिवबाबा ने हम बच्चों को बताया है कि सभी आत्माओं को मुक्ति ज़रूर मिलेगी और वे सभी परमधाम में जाकर रहेंगे। परंतु जिन आत्माओं ने शिवबाबा को पहचाना है और पुरुषार्थ किया है उन सभी आत्माओं को मुक्ति और जीवनमुक्ति दोनों मिलेंगी अर्थात् ये आत्मायें परमधाम जाकर वापिस नई सृष्टि पर राज्य करने आयेंगे जहाँ पर सम्पूर्ण सुख, शान्ति एवं आनंद की प्राप्ति होगी।

मैंने विभिन्न धर्मशास्त्रों का अध्ययन किया है जिससे यह मालूम पड़ा कि किसी भी धर्मस्थापक ने जीवन का कोई ऐसा लक्ष्य स्पष्ट नहीं किया है और ना ही बताया है जैसा कि हमारे बाबा ने हमारे सामने स्पष्ट किया है। लक्ष्य सामने स्पष्ट ना होने के कारण मार्ग भी स्पष्ट नहीं है और जब मार्ग स्पष्ट नहीं है तो भटकना पड़ता है और यह भटकने का जीवन कैसा होता है, यह आप, हम सब जानते हैं, 63 जन्म हम ऐसे ही भटकते आये हैं। ब्रह्मा बाबा भी अपने लौकिक जीवन में कई गुरु-गोसाइयों आदि के पास गये और ज्ञान लिया परंतु सत्य ज्ञान शिवबाबा से ही मिला।

योग द्वारा अष्टशक्तियों की प्राप्ति होती है जैसे कि परखने की शक्ति से हम योग्य व्यक्ति को पहचानते हैं और निर्णय शक्ति द्वारा हम यथार्थ निर्णय कर सकते हैं। मैनेजमेन्ट गुरुओं ने भी लिखा है कि शिक्षा का अर्थ होता है,

'To appoint right person for the right job and then be free from tension' अर्थात् योग्य कार्य के लिए योग्य व्यक्ति को नियुक्त करने से तनावमुक्त बनेंगे। योग्य कार्य के लिए योग्य व्यक्ति ढूँढ़ने के लिए बहुत परखशक्ति चाहिए। अगर अयोग्य व्यक्ति को रखते हैं तो वह कार्य सफल नहीं होता है और हमारा लक्ष्य पूरा नहीं होता है। इसी प्रकार निर्णय शक्ति भी बहुत जरूरी होती है। बाबा हम बच्चों को यज्ञ कारोबार में निर्णय शक्ति बढ़ाने के लिए कहते हैं। जब हमारे में ज्ञान अच्छी रीति होगा तब ही हम अपने यथार्थ अनुभव के आधार पर योग्य निर्णय कर सकेंगे और आगे बढ़ सकेंगे। ज़ोन, सब-ज़ोन, सेवाकेन्द्र, उप-सेवाकेन्द्र, गीता पाठशाला तथा यज्ञ का संचालन करने के समय निर्णय शक्ति का होना बहुत आवश्यक होता है। हम कह सकते हैं कि योग्य अनुभव एवं निर्णय शक्ति के आधार पर हम श्रेष्ठ कारोबार कर सकते हैं। मैं अपने अनुभव से लिखता हूँ कि मेरे पास निर्णय शक्ति नहीं थी तथा अनुभव भी नहीं था इसलिए पहले हम हर बात के लिए बार-बार बाबा के पास संदेश भेजते थे। परंतु धीरे-धीरे प्यारे बाबा की याद ने हमारी निर्णय शक्ति बढ़ाई और अभी अधिकतर हमें ही निर्णय लेने पड़ते हैं।

आदरणीया दादी प्रकाशमणि जी ने ज़मीन/भवनों की खरीद/सौगात में लेने की ज़िम्मेदारी हमें दी थी। शुरू में तो मैं सब बातें दादीजी से पूछकर करता था। एक बार दादीजी ने मुझे स्पष्ट कहा कि आप हमें पूछते क्यों हो? बाबा ने जब आपको जिम्मेदारी दी है तो आप हिम्मत रखो और कार्य करो, बाबा ज़रूर गाइड करेगा। यही बात प्यारे ब्रह्मा बाबा ने हमें सिखाई। जब वर्ल्ड रिन्युअल स्प्रिच्युअल ट्रस्ट की स्थापना हुई तो मुझे उसका मैनेजिंग ट्रस्टी बनाया तब मैंने बाबा को कहा था कि बाबा मुझे ट्रस्ट चलाने का अनुभव नहीं हैं तो बाबा ने मुझे कहा कि जब भी कोई बात हो, शिवबाबा को याद करो और ऐसे समझो कि कल्प पहले भी मैंने इस कार्य को किया था। इस प्रकार बाबा से मार्गदर्शन मिलेगा और आप सही निर्णय कर सकेंगे। इस प्रकार से मैंने ब्रह्मा बाबा का मार्गदर्शन स्वीकार किया और यथार्थ निर्णय करता गया। यह अनुभव मुझे विदेश सेवा में बहुत काम आया।

सन् 1971 में जब हम विदेश सेवार्थ गये तो उस समय हमारे पास केवल 6 डॉलर थे और उसी में सारा कारोबार करना था। हमारा स्वयं का खर्चा, सेवा आदि के लिए खर्चा सब उसमें ही करना था। जब हम न्यूयॉर्क से आगे सेवार्थ गये तब हमारे दो ग्रुप बने। एक ग्रुप में शीलइन्द्रा दादी, रोजी बहन तथा जगदीश भाई थे और दूसरे ग्रुप में मैं, ऊषा जी तथा डॉ. निर्मला थे। ये दोनों ग्रुप अलग-अलग दिशाओं में गये और फिर सभी हांगकांग पहुँचे। तब हमारे पास शीलइन्द्रा दादी जैसी संदेशी नहीं थी और मधुबन में भी फोन करके मार्गदर्शन नहीं ले सकते थे क्योंकि हम आर्थिक रूप से कमज़ोर थे। ऐसे समय पर हमने आत्मिक शक्ति एवं अनुभव के आधार पर ही सेवा की और निर्णय लिये। नॉर्थ अमेरिका में कैनेडा, टोरन्टो, शिकागो एवं सैनफ्रान्सिस्को आदि स्थानों पर सेवा कर बाबा का संदेश दिया।

जब लक्ष्य स्पष्ट होता है तो पुरुषार्थ भी श्रेष्ठ और सहज हो जाता है और कम समय में कार्य हो सकता है इसलिए मैनेजमेंट के कारोबार में भी स्पष्ट लक्ष्य तथा लक्ष्य में दृढ़ता का होना ज़रूरी है।

इस लेख द्वारा आप सभी से यही निवेदन है कि जीवन में अपने लक्ष्य को स्पष्ट रखो तो निर्णय भी यथार्थ होगा और श्रेष्ठ कारोबार कर सकेंगे। संगमयुग के इन्हीं अनुभवों के आधार पर हम आगे भी अटल, अखण्ड और निर्विघ्न कारोबार कर सकेंगे। ☺

ऐसे खुशनुमा बनो जो मन की खुशी सूरत से स्पष्ट दिखाई दे

सदा याद आयेगी आपकी ममता और उपकार
देवी माँ-सा रूप आपका, करुणा और दुलार
फरिश्तों-सा जीवन, सबकी हितैषी, मददगार
जीवन जीवन्त आपका गीता का सच्चा सार
अर्पित आपको हृदय से श्रद्धा सुमन अपार

श्रद्धांजलि

बापदादा की अति लाडली, साकार मात-पिता के हस्तों से पली हुई मीठी अचल बहन – चण्डीगढ़, पंजाब, हरियाणा, हिमाचल प्रदेश, जम्मू कश्मीर तथा उत्तरांचल (पंजाब जोन) की मुख्य संचालिका थी। आप वर्ष 1953 में 23 वर्ष की आयु में अमृतसर में ब्रह्माकुमारी संस्था के सम्पर्क में आईं। ईश्वरीय प्रेरणाओं से आपने वर्ष 1953 में ही मानवता के आध्यात्मिक उत्थान के लिए अपना जीवन ईश्वरीय सेवाओं में समर्पित कर दिया। आप 1968 में चण्डीगढ़ में स्थानीय सेवाकेन्द्र की संचालिका नियुक्त हुईं। चण्डीगढ़ में रहते हुए 45 वर्षों तक सारे उत्तर भारत की आध्यात्मिक सेवा की। आप ब्रह्माकुमारी संस्था के सिक्योरिटी सर्विस विंग की अध्यक्षा तथा ब्रह्माकुमारीज़ एज्युकेशनल सोसायटी के गवर्निंग बोर्ड की सदस्या थीं। आपने अनेक ब्रह्माकुमारी शिक्षिकाओं को ट्रेनिंग देकर ईश्वरीय सेवाओं के लिए तैयार किया तथा अनेक सेवा-स्थान खोलने के निमित्त बनीं। आप यज्ञ की अनन्य संदेशी भी थी। आप सादगीपूर्ण जीवन से सबको प्रेरणा देने वाली, सबके दिलों को जीतने वाली, ममतामयी माँ बन सबकी पालना करने वाली, सबकी आदर्श तथा असीम स्नेह व करुणा की प्रतिमूर्ति थी।

कुछ समय से आपकी तबियत ठीक नहीं थी। आप 07 अक्तूबर, 2014 को अपना पुराना शरीर छोड़ बापदादा की गोद में समा गई। ऐसी स्नेही, अथक सेवाधारी, ईश्वरीय सेवाओं की आदिरत्न, महान आत्मा को पूरा दैवी परिवार बहुत स्नेह से श्रद्धा सुमन अर्पित करता है।

खामोश बेशक हूँ...

ब्रह्माकुमारी नीरू, गढ़ी हरसरू (हरियाणा)

खामोश बेशक हूँ पर उदास नहीं हूँ मैं,
दूर नहीं इस दुनिया से पर पास नहीं हूँ मैं।

जग के रिश्ते पल के हैं, पल भर ही रहते पास,
शिव साजन से दिल को लगाया, रिश्ता है ये खास।
जीते जी हाँ मर गई लेकिन लाश नहीं हूँ मैं,
दूर नहीं इस दुनिया से पर पास नहीं हूँ मैं।।

नहीं चाहिएँ जग के साधन, न जग से है काम,
मिल गया मुझको, मिल गया जाको सबसे ऊँचो धाम।
बाँध के घुंघरू पग पैंजनियाँ, नाच रही हूँ मैं,
दूर नहीं इस दुनिया से पर पास नहीं हूँ मैं।।

कोई नहीं किसी का बंदे, काहे राग सताए है,
पांच चोर तेरी खुशियों पर, बैठे घात लगाए हैं।
बेगम बादशाह पत्ते पल के, ताश नहीं हूँ मैं,
दूर नहीं इस दुनिया से पर पास नहीं हूँ मैं।।

आत्म-ज्ञान ने दग्ध किया कूड़े का कितना ढेर
लगी लगन अब उनसे मेरी, सांझ-दिवस करूँ टेर।
आए मुझको लेने, गठरी बांध रही हूँ मैं,
दूर नहीं इस दुनिया से पर पास नहीं हूँ मैं।।

खामोश बेशक हूँ पर उदास नहीं हूँ मैं,
दूर नहीं इस दुनिया से पर पास नहीं हूँ मैं।

जीवन रक्षक बैज

ब्रह्माकुमार संदीप,
बहादुरगढ़

पिछले वर्ष (2013) ब्रह्माकुमारी आश्रम में रक्षाबंधन के पावन पर्व पर परमात्म स्मृति का तिलक लगाकर, दिलखुश मिठाई खिलाकर, रक्षा का सूत्र निमित्त बहन द्वारा बांधा गया। मैंने भगवान से मन ही मन वायदा किया कि मैं ईश्वरीय बैज सदैव लगा कर रखूँगा ताकि मुझे परमात्मा की याद निरंतर बनी रहे। मैंने दृढ़ प्रतिज्ञा की और भगवान ने भी मेरी रक्षा का वायदा किया।

अचानक घटी दुर्घटना

प्रतिज्ञा करने के बाद साल में 365 दिन बैज लगाया और इस वर्ष (2014) रक्षाबंधन के पावन दिन पुन: रक्षा-सूत्र बंधवाकर सोनीपत सेवास्थान की ओर मोटरसाइकिल से आ रहा था। बीच रास्ते में मेरे सामने एक गाड़ी वाले ने एकदम ब्रेक लगा दिए जिस कारण मैं बुरी तरह से दुर्घटनाग्रस्त हो बीच सड़क पर गिर गया। सिर में चोट लगने के कारण बेहोश हो गया। गाड़ी वाले ने मुझे तुरंत सड़क से उठा कर अपनी गाड़ी में बिठा लिया और उस भीड़ वाली जगह से निकल गया। मेरे प्राण तन से निकलते देख वह घबरा गया और सड़क के किनारे झाड़ियों में सुनसान जगह पर फेंक कर भाग गया।

भगवान ने निभाया अपना वायदा

कुछ देर बाद वहाँ से गुजर रहे दो मोटरसाइकिल सवार भाइयों ने मुझे झाड़ियों में पड़े देख अनुमान लगाया कि कोई शराबी नशे में पड़ा है, फिर वे आगे निकल गए। उनमें से एक भाई की बुद्धि को भगवान ने तुरंत टचिंग दी कि एक बार देख तो लें। उन्होंने मोटरसाइकिल को घुमाया और वापिस मेरे पास आए। मुझे उलट-पलट कर देखा तो उनकी नज़र मेरे ईश्वरीय बैज पर गई। वे आपस में कहने लगे, यह तो कोई ओमशांति का भाई है। उन्होंने तुरंत मोरथल (सोनीपत) ब्रह्माकुमारी आश्रम में फोन कर दिया। एक सेकण्ड की भी देरी किए बिना ब्रह्माकुमार भाइयों ने पहुँच कर मेरा प्राथमिक उपचार किया और हॉस्पिटल में दाखिल करा दिया। इस तरह भगवान ने रक्षा करने का अपना वायदा पूरा किया।

परिवार में रक्षाबंधन के दिन सभी संबंधी आए हुए थे। दुर्घटना की खबर सुनकर सबके होश उड़ गए और सभी हॉस्पिटल पहुँच गए। पर तब तक तो भगवान द्वारा भेजे गए फरिश्तों (ब्रह्माकुमार भाइयों) द्वारा मुझे नए जीवन का गिफ्ट मिल चुका था। सभी परिवार वालों ने मिलकर भगवान का लाख-लाख शुक्रिया किया। मेरे दिल से भी बारंबार मेरे सच्चे रक्षक के लिए शुक्रिया निकलता है जिन्होंने मुझे नया जीवन दिया। मेरा तो मेरे भाई-बहनों से केवल यही कहना है कि जीवन-रक्षक बैज सदा लगाकर रखें। ☺

गतांक से आगे...

सार्वभौमिक बंधुत्व का आधार मित्रता

➢ ब्रह्माकुमार नरेश, मुजफ्फ़रनगर

कहावत है कि आत्मा स्वयं अपना मित्र है और स्वयं ही अपना शत्रु है। अपने आत्मिक गुण व शक्तियों का प्रयोग करना स्वयं से मित्रता करना है और विकारों के वशीभूत होकर स्वयं को व संबंध-सम्पर्क वालों को दुख, पीड़ा या यातना देना स्वयं से शत्रुता करना है। ऐसी शत्रुता अगले जन्म में भी फलीभूत होकर जीवन नर्कमय बनाती है। महावीर के अनुसार, मेरी मित्रता सारे विश्व से है परन्तु मेरा किसी से भी वैर नहीं है, जो कि सतयुग व त्रेतायुग के सम्बन्धों का सार है।

मित्रता का मर्म है मित्र की गलतियों को नज़रअन्दाज करना

मित्रता शाश्वत हो, इसके लिए कुछ बुनियादी सावधानियां हैं। मित्रता का मर्म है मित्र की गलतियों को नज़रअन्दाज़ करना और उसकी विशेषताओं पर गर्व करना। ऐसा एक भी व्यक्ति नहीं जिसमें कोई विशेषता न हो। मित्रों को समाज में एक दूसरे का सम्मान करना चाहिए और जो भी कमियां व गलतियां हों, उन्हें एकान्त में उजागर करना चाहिए। दो मित्रों के मध्य विवाद दिखाता है कि कोई एक गलती पर है परन्तु विवाद यदि लम्बा चलता है तो फिर दोनों ही गलती पर हैं। विवाद शुरू तो मित्रों के मध्य होता है परन्तु इसका जारी रहना शत्रुओं के मध्य होता है। देखा जाए तो विवाद होने का मतलब ही है कि वे मित्र थे ही नहीं, बस मित्रता का आवरण डाल रखा था, जो हल्की सी आंधी में उड़ गया। बैलगाड़ी पर यदि मर्सिडीज कार का कार-कवर डाल दिया जाए, तो अंदर से बैलगाड़ी ही निकलेगी। मित्रता को मिटाने में शक की प्रमुख भूमिका है। शक पैदा होने पर पति-पत्नी के सम्बंधों में भी दरार आ जाती है। यहां तक कि ईश्वरीय ज्ञान मार्ग पर चलता हुआ पुरुषार्थी भी संशय या शक के पैदा होने पर अपने भाग्य को लात मारकर पुरुषार्थ करना छोड़ देता है।

मित्रता को नष्ट करता है उपहास एवं उधार

मित्रता को नष्ट करने का एक अन्य कारण है मज़ाक करना। मज़ाक अर्थात् किसी बात में व्यंग्य, उपहास, तिरस्कार आदि का मिश्रण करना। मज़ाक करके शत्रु को मित्र नहीं बनाया जा सकता परन्तु मज़ाक करने पर मित्र ही शत्रु बन जाता है। आज चूंकि सहनशीलता का अभाव है और देह अभिमान सिर चढ़ कर कार्य करता है अत: मज़ाक को बर्दाश्त नहीं किया जाता। मित्रों को आपस में धन का लेन-देन या उधार लेना-देना नहीं करना चाहिए। कहा भी गया है कि कर्ज़ मित्रता का मर्ज़ है, जिससे मित्रता की मृत्यु हो जाती है। मित्रों में उपहार या सौगात की लेन-देन भी ठीक नहीं है। ऐसी सौगात उस मित्र की याद दिलाती रहती है जबकि दोनों मित्रों द्वारा याद किया जाना चाहिए परमपिता शिव को। बेहतर तो यह होगा कि मित्र को उससे सम्बन्धित एक प्यारा व न्यारा विचार भेंट करें। उपहार टिकाऊ नहीं होता परन्तु प्रेरणादायक बोल मित्र की स्मृति में जगह बना लेते हैं। उपहार, लेन-देन का हिसाब बनाता है जबकि श्रेष्ठ विचार मित्र के बन्धन काटने वाले हो सकते हैं। कई अनमोल विचार जीवन को पलट देने वाले होते हैं।

सज्जनों की मित्रता धीरे-धीरे बढ़ती है

मित्रों को कभी एक दूसरे से चतुराई नहीं करनी चाहिए, खास कर खान-पान के नियमों में। मित्रों में नेकी कर दरिया में डाल की भावना होनी चाहिए और दूसरे से न तो अपेक्षा करनी चाहिए, न ही उसकी कभी उपेक्षा करनी चाहिए। मित्रों में आपसी

हास हो, उपहास नहीं, वाद हो, विवाद नहीं। किसी से पहली बार मिलने पर उसके बारे में कोई धारणा नहीं बनानी चाहिए और चूंकि यह कलियुग है अत: मित्रता को मन्थर गति से धीमी आंच पर लम्बे समय तक पकने देना चाहिए। चूंकि आज सभी मुखौटाधारी हैं अत: पहली ही मुलाकात में संस्कारवश किसी से मित्रता कर लेना उस व्यक्ति से जल्दी ही दुख मिलने का कारण बन सकता है। अब वह समय नहीं कि किसी से भी यूं ही मित्रता कर ली जाए। कहा जाता है कि दुष्टों की मित्रता जल्दी बढ़ती है और सज्जनों की धीरे-धीरे। परन्तु दुष्टों की मित्रता को मित्रता नहीं कहा जा सकता क्योंकि जिसके भी अन्दर मैत्री-भावना जीवित है, वह दुष्ट नहीं हो सकता। दुष्टों में दिख रही मित्रता तो एक समझौता है। समझौता उसी प्रकार का होता है, जिस प्रकार कि बेईमानों में आपसी ईमानदारी होती है।

भिन्नता का आदर करें

ऐसा होता नहीं कि दो मित्रों के स्वभाव-संस्कार एक समान हों। एक-दूसरे की भिन्नता का आदर करना मित्रता का प्राण है। आध्यात्मिक नियमों पर चलने वाले पुरुषार्थियों में भी भिन्नता होती है परन्तु वे एक-दूसरे के पुरुषार्थ का सम्मान करते हैं। पुरुषार्थ में ब्रह्मचर्य और खान-पान के नियमों का पालन शक्ति-पुंज का कार्य करते हैं। यदि एक पुरुषार्थी मित्र निमित्त बनता है दूसरे के किसी नियम के टूटने के, तो इसका विकर्म बड़ा भारी है। पुरुषार्थ में कभी भी नहीं डिगना, यह एक अच्छी बात है परन्तु पुरुषार्थ में डिग कर फिर पहले से भी ज्यादा ऊंचाई प्राप्त कर लेना, यह अति श्रेष्ठ बात है। पुरुषार्थ में चुनौतियां स्वीकार करनी चाहिएँ क्योंकि इनसे या तो सफलता मिलती है या अमूल्य शिक्षा।

प्राथमिकता दें चरित्र को

विकारों व मित्रता में उल्टा संबंध है। काम विकार के कारण आज सारे संबंध तार-तार होते जा रहे हैं। दृष्टि की अपवित्रता ने कितने सहयोगी व संबंधियों को शत्रु बनाया है, यह किसी से छिपा नहीं है। दैहिक काम से आत्मिक-मुकाम (शान्तिधाम व सुखधाम) विस्मृत हो जाता है। क्रोध से बड़ा मित्रता का नाशक दूसरा कोई नहीं। लोभ के कारण तथाकथित मित्रों के मध्य अविश्वास व धोखा आम बात हो गई है। परिवार में माताओं का अपनी सन्तान से इतना मोह होता है कि औलाद बिगड़ जाती है और फिर पति-पत्नी के मध्य इसी बात पर दोषारोपण होता है, जिससे दाम्पत्य जीवन में प्रेमभाव-मैत्रीभाव समाप्त होकर कटुता का ज़हर फैलता है। ईर्ष्या रूपी दीमक, मित्रता के वृक्ष को कुतर डालती है। दो आलसी व्यक्तियों की मित्रता तो टिक सकती है परन्तु एक यदि कर्मशील व समय का पाबंद है और दूसरा आलसी, तो पहला उससे जल्दी ही तौबा कर लेता है। मोटे तौर पर कहा जा सकता है कि दो विकारी मनुष्य एक-दूसरे के सच्चे मित्र कभी नहीं हो सकते और दो सद्गुणों से युक्त मनुष्य एक-दूसरे के शत्रु कभी नहीं हो सकते। यदि कभी मित्र का चयन करने की छूट हो, तो प्राथमिकता अगले के चरित्र को देनी चाहिए, न कि अच्छे व्यक्तित्व को। चरित्र है उज्ज्वल संस्कार जबकि व्यक्तित्व में अभिमान की अल्प मिलावट उसी प्रकार से हो सकती है जैसे कि सोने के गहने बनाने में थोड़ी खाद या खोट मिलाई जाती है।

मित्रता करें भगवान शिव और उनके बच्चों से

एक कहावत है कि मारै तो हाथी, लूटै तो भण्डार अर्थात् चींटियों को मार कर और भिखारियों को लूट कर कितना लाभ हो सकता है! अत: मारना ही है तो हाथी के समान माया व विकारों को मारा जाए और लूटना ही हो तो ज्ञान रत्नों को लूटा जाए। विकार हों या अज्ञान की दकियानूसी बातें, इनके निर्यातक हमारे मित्र या साथी-संगी ही होते हैं। इनसे जो कुछ भी प्राप्त होता है, उसकी चेकिंग नहीं की जाती। स्थूल धन कहीं लुट न जाए, यह एक चिन्ता का कारण होता है परन्तु ज्ञान का धनी तो सदा लुटना व लुटाना चाहता है परन्तु लूटने वाला विरला ही दिखाई देता है। यह विचित्रता ही है कि कुसंग का रंग फौरन लगता है और सद्गुणों का रंग अगले को बमुश्किल चढ़ता है। जैसेकि कोयला कपड़े को काला कर देता है जो जल्दी छूटता नहीं परन्तु फूलों की पंखुड़ियां या टैलकम पाउडर कपड़े पर पड़ जाए तो झटकने से सहजता से उतर जाता है। परन्तु ये कुछ समय तक की खुशबू तो छोड़ ही जाते हैं। अत: यह बहुत-बहुत आवश्यक है कि संगदोष से बचा जाए, जो तब ही संभव है, जब मित्रता में पड़ने की बजाय तटस्थता (साक्षी भाव) व सतर्कता से संबंध निभाए जाएं। यदि मित्रता करनी ही है तो परमपिता शिव से व शिव के अनन्य बच्चों से की जाए। शिव चूंकि निराकार है, अत: उसका साथ तभी संभव है जब (1) उसके समान बना जाए, (2) जब उसे समीप अनुभव किया जाए और (3) जब वह सर्व संबंधों से याद आता रहे। फिर तो आत्मा सम्पूर्णता को प्राप्त कर अपना मित्रलोक (परलोक, सतयुग) सुरक्षित कर लेगी। शिव को साथी या मित्र के रूप में प्राप्त करना केवल चल रहे संगमयुग में ही संभव है।

आज ज़रूरत है यथार्थ विश्वामित्रों की

आज विश्व की स्थिति विस्फोटक है। सभी देश एक-दूसरे से किसी न किसी मुद्दे पर टकराव की स्थिति में हैं। विश्व में जो भी अशान्ति है, उसका कारण मित्रता की कमी है। मित्रता न होना या मित्रता का टूटना अशान्ति पैदा करता है। धर्मों की विविधता आज झगड़ों की विविधता बन गई है। आम आदमी मित्रता में जीता है और मित्रता का टूटना उसे दुखी व अशान्त बनाता है। विभिन्न धर्मों के अनुयायी एक दूसरे के धर्म के प्रति वैमनस्य (शत्रुता) रखते हैं। परिवार टूट रहे हैं व कचहरियों में मेला-सा लगा रहता है। आपसी मित्रता आज गुज़रे ज़माने की बात हो गई है। आज ऐसे यथार्थ विश्वामित्रों की आवश्यकता है, जो विश्व के मित्र बन वैश्विक सौहार्द को बढ़ा सकें। ऐसे में विश्व भर में फैले ब्रह्माकुमार-कुमारियां मित्रता व भाईचारे का सन्देश फैलाने का कार्य कर रहे हैं। वे ईश्वरीय श्रीमत पर चल कर आपसी प्रेम व मित्रता बढ़ाने के ईश्वरीय कार्य में सहयोगी बन रहे हैं। वे एक मित्र समूह का हिस्सा बन रहे हैं, यह समूह आने वाली नई सतयुगी दुनिया में प्रत्यक्ष होने वाला है।

आइये, अपने आत्मिक गुणों व शक्तियों का विश्व कल्याण हेतु प्रयोग करें। सामाजिक दायित्वों का निर्वाह करते हुए मैत्री-भाव से दूसरों के दुख व सन्ताप को कम करने के ईश्वरीय कार्य में सहयोगी बनें। मैं इस दुनिया में मित्रों के बीच रह रहा या रही हूँ, इस स्वमान से सभी को मित्र समझें। यदि सभी मित्र हैं तो मायावी व विकारी संकल्पों से बचा जा सकता है जिससे फिर ईश्वरीय स्मृति में टिकना सहज होता है। अन्ततोगत्वा, मित्रता के दायरे को बढ़ा कर सार्वभौमिक बंधुत्व में बदल दें ताकि आत्मिक व वैश्विक संपन्नता प्राप्त हो सके। (समाप्त)

जीवन में मधुरता का गुण धारण करना ही महानता है

परमात्मा परमशिक्षक के रूप में

➡ **ब्रह्माकुमार उर्मिला, संयुक्त संपादिका**

भक्ति मार्ग का एक सुप्रसिद्ध श्लोक जिसमें भगवान की महिमा की गई है, इस प्रकार है,

त्वमेव माता च पिता त्वमेव
त्वमेव बन्धुश्च सखा त्वमेव।
त्वमेव विद्या द्रविणम् त्वमेव
त्वमेव सर्व मम देव देव।।

इस श्लोक में परमात्मा पिता को माता, पिता, बन्धु, सखा के साथ-साथ विद्या भी माना गया है। भगवान ही विद्या हैं इसका अर्थ यही हुआ कि उनको जानना ही विद्या है और वो जो सिखाते हैं, वही विद्या है। अत: परमात्मा ही परमशिक्षक हैं अर्थात् शिक्षकों के भी शिक्षक हैं।

शिक्षक भी याद करता है परमशिक्षक को

भारत के हर विद्यालय में प्रतिदिन की पढ़ाई का प्रारम्भ परमात्मा पिता के प्रति प्रार्थना से होता है जिसमें उनके गुणों और कर्त्तव्यों की महिमा होती है। लौकिक शिक्षक द्वारा पढ़ाई का प्रारम्भ होने से पहले परमशिक्षक से वरदान, बुद्धि, शक्ति लेना अनिवार्य है। यदि किसी बच्चे को कोई पाठ याद नहीं हो पाता तो शिक्षक भी यही दुआ करता है, हे परमपिता, इसे सद्बुद्धि दो ताकि यह पढ़ाई को आत्मसात् कर सके। स्वयं शिक्षक होते भी वह परमशिक्षक की सहायता चाहता है।

कौन-से ज्ञान बिना गति नहीं

वर्तमान युग ज्ञान के विस्फोट का युग है। रेडियो, टी.वी., समाचार-पत्र, इंटरनेट, पुस्तकालय, पत्रिकाएँ तथा शिक्षा संस्थानों द्वारा प्रतिदिन अथाह ज्ञान परोसा जाता है फिर भी हम ज्ञान के प्यासे हैं और भगवान को कहते हैं, 'नयनहीन को राह दिखाओ प्रभु', 'तमसो मा ज्योतिर्गमय', 'हे प्रभु ज्ञान दो' आदि-आदि। यह भी कहा गया है, 'ज्ञान बिना गति नहीं।' प्रश्न है कि कौन-से ज्ञान बिना गति नहीं? क्या डॉक्टर बनने का ज्ञान नहीं पढ़ेंगे तो गति नहीं होगी? क्या वकालत का ज्ञान नहीं पढ़ेंगे तो गति नहीं होगी? क्या इन्जिनियर बनने का ज्ञान नहीं पढ़ेंगे तो गति नहीं होगी? ऐसा नहीं है। जिस ज्ञान बिना गति नहीं, वह है आत्म-ज्ञान, परमात्म-ज्ञान, सृष्टि के आदि-मध्य-अन्त का ज्ञान, कर्म-गति का ज्ञान। इसी ज्ञान की मांग हम परमात्मा से करते हैं और इसीलिए वो परमशिक्षक हैं।

मानव से देव बनने की पढ़ाई परमात्मा द्वारा

आई.ए.एस.,सर्जन, न्यायाधीश, राजनेता आदि बनना आज के युग में उच्च उपलब्धि माना जाता है, जो लौकिक पढ़ाई से सम्भव है। इन उपलब्धियों को पाकर पद, पैसा, प्रतिष्ठा तो मिल जाते हैं परन्तु लम्बी आयु, निरोगी काया, ऊँचा चरित्र, मधुर सम्बन्ध, मन की शान्ति आदि भी मिलें, इसकी कोई गारन्टी नहीं है। इसकी भेंट में, परमशिक्षक परमात्मा शिव जो पारलौकिक पढ़ाई पढ़ाते हैं वह ऐसी है जिसमें सर्वोच्च मान, पद, प्रतिष्ठा के साथ अखुट धन, कंचन काया, परम पवित्र सद्गुणी मन तथा विश्ववंदनीय चरित्र प्राप्त होता है। यह पढ़ाई है नर से श्रीनारायण तथा नारी से श्रीलक्ष्मी बनने की अर्थात् मानव से देवता बनने की। इसके लिए कहा गया है, 'जिन मनुष्य से देवता किए करत न लागी वार'।

समय के साथ शिक्षा का बदलता स्वरूप

संसार में शिक्षा का स्वरूप सदा एक-सा नहीं रहा है। समय और युग की मांग के अनुसार इसका रूप बदलता आया है। सतयुग-त्रेता में दैवी राजकुमारों ने स्वर्णनिर्मित कक्षों में, स्वर्णनिर्मित पट्टिकाओं पर, स्वर्णतूलिका से प्राकृतिक चित्र उकेरे, सामूहिक नृत्य (रास), गायन, वादन और भाषा सीखी – यही उनकी पढ़ाई थी। वैदिक काल में उसी शिक्षा में कठोर तप और श्रम का समावेश हो गया। ब्रह्ममुहूर्त में उठना, ठण्डे जल से स्नान करना, जंगल से लकड़ी लाना, भिक्षाटन से जीवन चलाना – यह गुरुकुलों की दिनचर्या थी। मुस्लिम बादशाहों के राज्यकाल में शिक्षा मुल्ला-मौलवियों के हाथों में चली गई। अंग्रेज़ों के काल में यह आजीविका का साधन बनी। आज की शिक्षा अंग्रेज़ी प्रणाली पर आधारित है। करोड़ों को साक्षर बनाने का कार्य शिक्षा का वर्तमान ढांचा कर रहा है।

धर्मग्लानि बनाम शिक्षा की ग्लानि

शिक्षार्थियों की संख्या, शिक्षा संस्थाओं और पाठ्यक्रमों का विस्तार होते भी आज शिक्षितों की आन्तरिक शक्तियाँ बुझी पड़ी हैं जबकि शिक्षा का असली उद्देश्य उन्हीं को जगाना था। भगवान का अवतरण धर्मग्लानि के समय धरती पर होता है। हर जड़-चेतन का अपना-अपना धर्म होता है। यदि धरती स्थिरता छोड़ दे, हिलने लगे तो यह धरती के धर्म की ग्लानि है। यदि पिता कमाना और पालना करना छोड़ दे तो यह पिता के धर्म की ग्लानि है। इसी प्रकार शिक्षा जब चरित्र-निर्माण करना छोड़ दे, आन्तरिक बल को जगाना छोड़ दे तो यह शिक्षा की ग्लानि है और जब शिक्षा की ऐसी ग्लानि हो जाती है तभी परमात्मा को परमशिक्षक के रूप में पार्ट बजाना पड़ता है।

केवल एक जन्म के लिए शिक्षक

हमारे समाज में गुरु वो है जो गौरव प्रदान करे, मास्टर वो है जो माँ के स्तर पर आकर शिक्षा दे, आचार्य वो है जो आचरण के द्वारा शिक्षा दे। इतनी महिमा वाले लौकिक शिक्षक केवल एक जन्म के शिक्षक हैं। आज वे जिस बच्चे को पढ़ा रहे हैं, पूर्वजन्म में भी उसके शिक्षक थे, इसकी गारंटी नहीं है। अगले जन्म में भी बनेंगे, कोई गारंटी नहीं है। जैसे माता-पिता हर जन्म में बदल जाते हैं, शिक्षक भी बदल जाते हैं। एक ही जन्म में कई-कई शिक्षक बन जाते हैं परन्तु परमात्मा शिव एक ही हैं और जन्म-जन्म के परम शिक्षक हैं। लेख के आरम्भ का श्लोक हमने हर जन्म में गाया है और उन्हीं के लिए गाया है।

केवल एक जन्म के लिए शिक्षा

जैसे लौकिक शिक्षक एक जन्म साथ देता है ऐसे ही लौकिक शिक्षा भी मात्र एक जन्म साथ निभाती है। मान लीजिए, कई शिक्षकों की प्रेरणा, मेहनत, शिक्षा से एक विद्यार्थी आई.ए.एस. बन गया। इस पद तक पहुँचने में उसे 30 वर्ष लग गए और इस पद पर उसने 30 साल नौकरी की। एक वर्ष की पढ़ाई के बदले 1 वर्ष का पद, उसकी प्राप्ति का औसत इस प्रकार निकला। शरीर छोड़ने के बाद इसी आई.ए.एस.डिग्रीधारी की आत्मा को नए शरीर द्वारा फिर से क, ख, ग... सीखने पड़ेंगे। यह कह नहीं सकेगा कि मैं पिछले जन्म का आई.ए.एस हूँ तो इस जन्म में बिना पढ़े ही वह डिग्री दे दो क्योंकि पद और पढ़ाई दोनों विस्मृत हो जाएँगे। ऐसी कोई दैवी या स्वत: स्फुरित प्रणाली भी नहीं है कि पिछली पढ़ाई के आधार पर अगले जन्म में पद मिले।

21 जन्मों के लिए शिक्षा और पद

परन्तु परमात्मा, परमशिक्षक के रूप में जो कुछ पढ़ाते हैं वह आत्मा के साथ जाता है, फलस्वरूप 21 जन्मों तक वह आत्मा जन्म-पुनर्जन्म की कड़ी में देव पद पाती ही रहेगी। परमात्मा परमशिक्षक के रूप में जो पढ़ा रहे हैं वह पढ़ाई अविनाशी है। एक जन्म के पुरुषार्थ के बदले 21

जन्मों का सुख देने वाली है। वह केवल धन और प्रतिष्ठा की प्राप्ति तक सीमित नहीं बल्कि सर्वांगीण सुख देने वाली है। परमशिक्षक परमात्मा की पढ़ाई का पद वर्तमान में आँखों से नहीं दिखता पर बुद्धियोग बल से महसूस होता है कि भविष्य में 21 जन्म देवता बनने वाला हूँ। मानवीय पढ़ाई का पद वर्तमान में दिखता है पर भविष्य जन्म में उसका कोई फल नहीं है। अधिकतर लोग केवल वर्तमान के अल्पकाल के फल को देखते हैं और भविष्य की प्राप्तियों को उपेक्षित करते हैं इसलिए परमात्मा पिता की पढ़ाई से वंचित रह जाते हैं।

ईश्वरीय पढ़ाई में उम्र, जाति, धर्म, भाषा, लिंग का कोई बन्धन नहीं है। लौकिक रीति से अनपढ़ भी इसे पढ़ सकता है। गोद के बच्चे से लेकर 100 वर्ष के बुजुर्ग – सभी के लिए यह उपलब्ध है। इसमें पारम्परिक शिक्षा की तरह यूनिफार्म, फीस आदि की औपचारिकताएँ नहीं हैं। कम खर्च में होने वाली यह पढ़ाई बुद्धि के सारे पट खोल देती है और मानव को इतना दिव्य बुद्धिमान बना देती है कि आधाकल्प लोग इन्हीं की यादगारों से सद्बुद्धि का वरदान मांगते हैं। विद्या की देवी सरस्वती ने इसे पढ़ा, इसी से श्री लक्ष्मी पद पाया और आज भी हम विद्यादायिनी से विद्या और सद्बुद्धि मांगते हैं। आज वही समय चल रहा है। सन् 1937 से परमात्मा शिव, पिताश्री प्रजापिता ब्रह्मा के मानवीय तन का आधार ले परमपिता, परमशिक्षक और परमसद्गुरु इन तीनों रूपों से मानवात्माओं की पालना, पढ़ाई और सद्गति की सेवा पर उपस्थित हैं। आप भी अवश्य लाभ लीजिये। अभी नहीं तो कभी नहीं। ☺

जब बाबा ऑटो में साथ बैठ गए

कमला बहन, जबलपुर (प्रेमनगर)

दो बच्चों की असमय मृत्यु के कारण मैं मानसिक रूप से बहुत अस्थिर और अधीर रहा करती थी। मेरी आस हर तरफ से टूट चुकी थी। एक बार ब्रह्माकुमारीज़ सेवाकेन्द्र के सामने से गुज़रते हुए खुद-ब-खुद मेरे कदम अन्दर की ओर चले गए। बहन जी के कहने पर ज्ञान का कोर्स कर लिया। मुझे लगा कि शिव बाबा ने मेरे दुख दूर करने के लिए अपने पास बुला लिया है। मैं रोज ज्ञान-योग की क्लास करने लगी।

एक बार मुझे संपत्ति के एक सौदे के लिए बड़ी रकम एक व्यक्ति को देनी थी। मैं शहर की सड़कों के बारे में ज्यादा नहीं जानती थी और हमेशा की तरह ऑटो रिक्शा करके चलने को तैयार हुई। ऑटो में बैठने के बाद किसी रिश्तेदार का फोन आने पर जैसे ही मैंने बैग से मोबाइल निकाला, तो ऑटो वाले को अन्दर रखे पैसे दिख गये। उसके मन में लालच आ गया और वह मुझे जहाँ जाना था उसकी बजाय करीब दो घण्टे तक यहाँ-वहाँ यह कहकर घूमाता रहा कि रोड जाम है। मुझे जब लगा कि बहुत समय हो गया है तो घबरा कर मन ही मन बाबा को याद करने लगी कि आप ही मेरी रक्षा करें। इसके बाद उसने मुझे मेरे गंतव्य पर छोड़ा। मैं उसको तय रुपये (100) देने लगी तो उसने कहा, बहन जी, बीच में आपने एक बूढ़े दादा को भी ऑटो में बिठाया था, जिन्होंने मुझे कहा कि यहाँ-वहाँ मत घुमाओ, ऑटो को सीधे रास्ते ले चलो, मुझे उनका किराया भी चाहिए। मैं आश्चर्य से अवाक् हो गई। मैंने पर्स से बाप-दादा का फोटो निकाल कर उसे दिखाया तो वह बोला, हाँ, यही दादा थे। मैंने खुशी-खुशी उसको पैसे दे दिये।

अहो बाबा, आपने कैसे मेरी मदद की। अब तो मैं बाबा की याद की मस्ती में मस्त रहकर अपने सारे कार्य करती हूँ और उनके साथ का अनुभव सदा करती हूँ। मेरा दिल सदा बाबा के साथ के गीत गाता हुआ हर्ष में निश्चिंत रहता है। ☺

गीता जयन्ती (मोक्षदा एकादशी) पर विशेष ...

युद्ध कर और विजयी बन, यही गीता का सार ...

ब्रह्माकुमार दिनेश, हाथरस

दो भाइयों का एक संयुक्त परिवार था। भाइयों का आपस में बहुत स्नेह लेकिन दोनों की पत्नियों में आपस में तकरार होती रहती थी जिससे घर का वातावरण कभी-कभी कलह का बन जाया करता था। दोनों दु:खी थे। पत्नियों को समझाने का प्रयास किया गया। वे पढ़ी-लिखी थीं, आपस में विवाद नहीं चाहती थीं लेकिन कभी-कभी न चाहते हुए भी हो जाता था। दोनों भाई एक सन्त के पास पहुँचे और अपनी समस्या बताई। सन्त ने दोनों पत्नियों को बुलाया, प्यार से समझाया और कहा कि न चाहते हुए भी कभी लड़ाई हो जाती है तो खूब लड़ो लेकिन लड़ने की तीन शर्तें हैं उन्हें स्वीकार करना पड़ेगा। दोनों पत्नियाँ इसके लिए तैयार हो गईं। सन्त ने पहली शर्त बताई कि कभी भी घर के बीच दीवार लगानी भी पड़े तो भी एक रास्ता अवश्य छोड़ देना। ऐसा इसलिए कि कठिनाई के समय, परिवार से बेहतर कोई साथी बन नहीं सकता। यदि परिवार का साथ है तो दुनिया की कोई भी ताकत कमज़ोर पड़ जायेगी। दूसरी शर्त, लड़ते समय केवल कहने योग्य बातें ही कही जायें। घर-परिवार की गुप्त बातें सार्वजनिक न की जायें। तीसरी शर्त, लड़ना पड़े तो भी क्रोध किये बिना, आँख दिखाये बिना लड़ना है। अब इसके लिए दोनों तैयार हो गईं। यही तो गीता का सार है।

काम, क्रोध, लोभ नरक के द्वार

श्रीमद्भगवद्गीता पर एक नज़र डालने से ही मालूम पड़ जाता है कि यह ज्ञान किसी शस्त्रयुद्ध के लिए नहीं लेकिन मनुष्यों की विकारी मनोवृत्ति को निर्विकारी बनाने अर्थ धर्मयुद्ध के लिए दिया गया है। अध्याय 16 का 21वाँ श्लोक कहता है, काम, क्रोध, लोभ ये तीन प्रकार के नरक के द्वार आत्मा का नाश करने वाले अर्थात् उसको अधोगति में ले जाने वाले हैं। गीता के तीसरे अध्याय के 37 से 43 तक के श्लोक बताते हैं कि मनुष्य का दुर्जेय अर्थात् मुश्किल से जीता जाने योग्य शत्रु यह काम विकार है। इस शत्रु को वश में करके उसे मारने की प्रेरणा दी गयी है। गीताकार का भावार्थ है – रजोगुण से उत्पन्न यह काम ही क्रोध है। जैसे धुएँ से अग्नि, मैल से दर्पण ढका रहता है उसी प्रकार काम से ज्ञान ढका रहता है। इन्द्रियों को वश में करके ज्ञान और विज्ञान (ज्ञान, योग) का नाश करने वाले काम को बलपूर्वक मार डाल। बुद्धि के द्वारा मन को वश में करके हे महाबाहो, तू इस काम रूपी दुर्जेय शत्रु को मार डाल। सचमुच आज इस काम विकार से ही सारी दुनिया जल रही है। आज समाज में इसका ही आतंक फैला हुआ है।

जिन्होंने भी गीता का सांगोपांग अध्ययन किया होगा वे ज़रूर महसूस करते होंगे कि श्रीमद्भगवद्गीता में मानव के महान शत्रु काम, क्रोध, लोभ, मोह और अहंकार आदि महाविकारों को मार डालने की बात बार-बार कही गई है तथा सद्गुणों, दैवीय सम्पदा को धारण करने की प्रेरणा प्रदान की गई है।

मोक्षदा एकादशी

गीता जयन्ती को मोक्षदा एकादशी यानी मुक्तिदायिनी एकादशी के रूप में भी मनाया जाता है। अब इस गहन राज़ को समझ लें कि दस इन्द्रियाँ और एक मन को मिलाकर एकादश हैं, इन सबके ऊपर नियंत्रण अर्थात् विजय प्राप्त करना ही सच्ची एकादशी है। इससे ही जीते जी मोक्ष यानि जीवनमुक्ति मिलती है। यही तो मोक्षदा एकादशी है। एकादशी का व्रत भी धर्मप्रेमी करते हैं। व्रत अर्थात् स्वयं की आसुरी वृत्तियों और इन्द्रियों को नियंत्रण में करना।

कल्याणकारी है भगवान की वाणी

महाभारत में वर्णित हर यौद्धे को आज प्रैक्टिकल में देखा जा सकता है। अर्जुन उस व्यक्ति विशेष का पर्याय है जो ज्ञान को अर्जित करने वाला है। युधिष्ठिर उस वीर का पर्याय है जो विकारों के साथ धर्मयुद्ध में धर्म और श्रेष्ठ कर्म पर स्थिर रहता है। भले ही भीष्म जैसे धर्मज्ञ, द्रोणाचार्य जैसे शास्त्र और शस्त्र विद्या के ज्ञाता, भीम जैसे बलवान, नकुल और सहदेव जैसे सुन्दर और आज्ञाकारी, दुशासन जैसे दुष्ट और दुर्योधन जैसे अभिमानी लोग संसार में हों, लेकिन यह परम सत्य ज्ञान सिर्फ उनके नसीब में होता है जो परमात्मा को अपना सब कुछ मानते हैं, जिनकी प्रीत बुद्धि है, जिन्होंने अपना सर्वस्व ईश्वर को समर्पण किया है। कल्पान्त में प्रजापिता ब्रह्मा बाबा के अन्दर प्रीत बुद्धि के ये सारे लक्षण विद्यमान पाये गये। अजानबाहु, धर्मप्रेमी, सभी प्रकार से सम्पन्न होने के बाद भी केवल परमात्मा शिव की एक प्रेरणा मात्र से उन्होंने अपना सर्वस्व लोक कल्याणार्थ, अहिंसक युद्ध लड़ने वाला अर्जुन बनकर लगा दिया। लोगों के भयंकर विरोध के बाद भी एक बल एक भरोसे से वे इस धर्मयुद्ध में स्थिर यानि 'युधिष्ठिर' रहकर संसार के लिए दृष्टान्त और शास्त्रों में गायनयोग्य ब्रह्मा की उपाधि से पुकारे गये। यह तो प्राय: सभी मानते हैं कि भगवान कल्याणकारी हैं इसलिए वे शिव कहलाते हैं। वे शान्ति और प्रेम के सागर हैं जिनकी एक बूंद के लिए भी दुनिया तरसती है। अत: उनकी वाणी ही कल्याणकारी है। कल्पान्त के समय (सुधीजन जानते हैं कि कल्पान्त यानि कल्प का अन्त सतयुग, त्रेतायुग, द्वापरयुग और कलियुग इन चारों युगों के बाद ही होता है न कि द्वापरयुग में कल्पान्त होता है) परमात्मा फिर से आकर नये कल्प की स्थापना कराते हैं। इसकी पुष्टि गीता के ही 9वें अध्याय के सातवें श्लोक ''सर्वभूतानि कौन्तेय प्रकृतिं यान्ति मामिकाम्। कल्पक्षये पुनस्तानि कल्पादौ विसृजाम्यहम्।।'' से होती है।

लोककल्याणार्थ मिलिए और आगे बढ़िए

कुल मिलाकर यही तो दो भाइयों के बीच कुरूक्षेत्र है जिसमें लड़ना ज़रूर है लेकिन बिना किसी की हत्या किये, बिना किसी पर क्रोध किये, बिना लोभ और मोह के वशीभूत हुए। इसमें जो विजयी बनता है वह यहाँ यानि इस जन्म में भी सुखी (संतुष्ट) रहता है और अगले जन्मों में भी श्रेष्ठ प्रारब्ध को पाता है। यही सच्चा गीता सार है। इलाहाबाद में और कोलकाता में दो विपरीत धाराओं का मिलन होता है और उनका मिलना संगम बन जाता है और लोगों के लिए आदरणीय हो जाता है। एक मिलन आगे बढ़कर मानवमात्र के कल्याण के लिए प्रस्थान कर जाता है, दूसरा मिलन एक दो में समाहित होकर एक समान बन जाता है। इसलिए इस कर्मक्षेत्र पर दो विपरीत धाराओं की तरह लोक कल्याण अर्थ मिलिए और आगे बढ़िए। यही धर्म क्षेत्र है, यही कुरूक्षेत्र है। ☺

विश्व बन्धुत्व दिवस पर
शान्तिवन डायमण्ड सभागार में
गुजरात हाईकोर्ट के वरिष्ठ न्यायमूर्ति
श्री रविराम त्रिपाठी जी का उद्‌बोधन

आज मैं यहाँ आने के बाद जो भावना अपने अंदर महसूस कर रहा हूँ, उसे शब्दों में व्यक्त करना थोड़ा मुश्किल काम है लेकिन जज का काम है, जो भी सुना उस पर जजमेण्ट करना। जब मैं यहाँ आ चुका हूँ और दादी जी का आशीर्वाद मुझे मिल रहा है तो मैं आपसे कुछ कहना चाहता हूँ। जज होने के नाते मेरा कानून से पाला पड़ता है सुबह से लेके शाम तक और शाम से लेके सुबह तक। दिमाग में एक ही चीज़ चलती रहती है कि जो केस मेरे पास आया है उसमें सच कौन है, जो कागज़ दिये जाते हैं उनसे यह तय करना होता है। सन् 1972 से लॉ से मेरा नाता शुरू हुआ और आज तक चालू है।

यहाँ आने से पहले मुझे लगता था कि लॉ से हम बड़े आराम से (शान्ति स्थापित) कर सकते हैं लेकिन यहाँ आने के बाद मेरा वह भ्रम काफी हद तक टूट चुका है। मैंने यहाँ आकर देखा कि यहाँ लॉ से ज्यादा दादी के प्रति श्रद्धा और समर्पण भाव है। सेल्फ डिसिप्लीन लेकर आप लोग यहाँ आते हैं और इतनी बड़ी सभा में इतनी शान्ति और प्यार से एक-एक शब्द को सुन रहे हैं। उससे मुझे लगता है कि सही मायने में आप लोग बहुत धन्यवाद के पात्र हैं। आप लोग आम जनता से ज़रूर एक कदम नहीं बल्कि अनगिनत कदम आगे हैं। इतने हज़ार लोगों को इकट्ठा करना सिर्फ दो जगह पर संभव होता है। या तो आर्म्स फोर्स का डिसिप्लीन हो या फिर दादी जैसी किसी महान विभूति का अपना कन्ट्रोल हो। मैं सोचता हूँ कि जब ब्रह्माबाबा यहाँ रहे होंगे तो उन्होंने यह ज़रूर सोचा होगा कि उनका बोया हुआ बीज एक विशाल वट वृक्ष बनेगा और आप सब लोग उस वट वृक्ष के हिस्से होंगे। आप उनके सारे शब्दों को साकार कर रहे हैं।

मुझे सिर्फ एक शिकायत है। जजेस की आदत होती है, हर चीज़ के बाद भी उन्हें कोई न कोई शिकायत ज़रूर रह जाती है। दादी जी से भी और आप सब माताओं-बहनों से भी मैं यह कह रहा हूँ कि आप लोगों के पास जो आध्यात्मिक ज्ञान है उसका इन्फेक्शन समाज को ज़रूर लगाइये। इबोला नाम की बीमारी का इन्फेक्शन तो अपने आप लग जाता है लेकिन आप लोगों के पास जो आध्यात्मिक ज्ञान, आध्यात्मिक अनुभव है उसका इन्फेक्शन समाज को कोन्शियसली (सप्रयास) लगाना होगा।

जब ऐसा इन्फेक्शन लगायेंगे तो मैं जो देख रहा हूँ, ये हॉल जो पूरा भरा हुआ है, बहुत से लोग बाहर बैठे हैं, मुझे लगता है कि दादी जी को ऐसे चार हॉल और बनाने पड़ेंगे। मुझे यह बहुत आश्चर्य लग रहा है कि जिस देश में नारी की पूजा होती थी उसमें एक स्टेज ऐसी आई जो नारी को काफी हद तक क्रश (गिराया) किया गया। उसके बाद फिर से एक नया दौर शुरू हुआ जो यहाँ पर प्रत्यक्ष दिखाई दे रहा है। यहाँ पर इतनी बड़ी संख्या में ऐसी मातायें और बहनें बैठी हैं जिनके दर्शनमात्र से आदमी की अपनी ज़िन्दगी सफल हो सकती है। मैं फिर से यह कहना चाहता हूँ कि आप सब लोग अपना ये इन्फेक्शन कोन्शियसली समाज में हर व्यक्ति को लगायें और एक समय ऐसा आये जब सिर्फ इस शान्तिवन कैम्पस के अन्दर ही नहीं लेकिन बाहर भी इसी तरह का वातावरण सृजन हो जाए, वो मेरे लिए बहुत सुखद दिन होगा। मैं

चाहता हूँ कि यह बहुत जल्दी हो और यह चीज़ आप लोगों से ही हो सकती है। दादी जी की छत्रछाया में रहते हुए, दादी जी का आशीर्वाद लेते हुए शिवबाबा का आशीर्वाद जो आपके पास आ रहा है, आपको उसे सिर्फ थोड़ा-सा फैलाना है। मुझे पक्का विश्वास है कि जब आप उसको फैलायेंगे तो जो सपना मैं देख रहा हूँ वह ज़रूर पूरा होगा, इसमें मुझे कोई शक नहीं।

अभी तक यह कहा जाता था कि लॉ से आप हर चीज़ कर सकते हैं। अब लोगों को पता चल गया है कि लॉ को सिर्फ आप बना सकते हैं और जब लॉ बनता है तो उसके टूटने के केसेज भी बनते हैं और उसके बाद फिर कोर्ट में केसेज बनते हैं। आप लोगों ने न्यूज पेपर में भी पढ़ा होगा कि आज हमारे देश में 3 करोड़ से अधिक केसेज पैन्डिंग हैं। सारे प्रोसेसिज के बावजूद, सारे जजेज मिलकर आज से नये केसेज लेना बन्द कर दें तो भी कुछ दशकों में यह कार्य पूरा कर पायेंगे। लेकिन ऐसा कभी हो नहीं सकता कि समाज होगा और नये केस नहीं आयें, इसलिए नये केसेज आते रहेंगे। ऐसे में सिर्फ एक काम हो सकता है और वह यह है कि आप लोग अपने हर पड़ोसी से ऐसा आपसी प्यार का नाता बनायें जिससे नये केस आने बन्द हों और सब लोग एक ही दिशा में कार्य करें।

दादी जी के प्रवचन सुनने के बाद मुझे ऐसा लग रहा था कि मैं जो बोलूँगा वह आप लोगों को ऐसा लगेगा जैसे चीनी के ऊपर कोई और चीज़ खाने को दी जाए तो वह फीकी लगेगी, दादी जी का इतना अच्छा प्रवचन मैं सुन रहा था। उससे लग रहा था कि मुझे कुछ नहीं बोलना चाहिए लेकिन फिर मुझे लगा कि नहीं मुझे जो आप लोगों के सामने अपनी बात रखनी है, जो आपसे माँगना है वह ज़रूर बोलना चाहिए। दादी जी इस बात से ज़रूर सहमत होंगी कि हमारे पास जो टेक्नोलॉजी है उसका हम प्रयोग कम, दुरुपयोग ज्यादा करते हैं। इस कैम्पस में मैंने देखा कि कहीं भी टी.वी.नहीं है, उसके बावजूद भी सभी खुश हैं तो जब यहाँ हो सकता है तो समाज में क्यों नहीं हो सकता। क्योंकि मेरा यह दृढ़ विचार है कि जो संस्कृति को तोड़ने का काम अंग्रेज़ों की गुलामी ने करीब 200 साल में नहीं किया वह टी.वी.ने पिछले 60 सालों में, उसमें भी पिछले 10 सालों में सबसे ज्यादा किया है। ऐसे में अगर आप बहनें-माताएं अपने घर से यह कार्य शुरू करके, अपनी सोसायटी से और आगे बढ़ाती हैं तो मुझे बहुत प्रसन्नता होगी। टी.वी. का प्रयोग सिर्फ अच्छे कार्य के लिए हो। नेगेटिविटी अपने दिमाग में ना भरी जाये। इसमें अगर आप प्रयत्न करके सफल होती हैं तो मुझे लगता है कि यह सबसे बड़ी समाज सेवा और मानव सेवा होगी।

मैं आपसे प्रार्थना करता हूँ कि दादी जी हमारे साथ ऐसे ही बनी रहें और जब भी मुझे यहाँ आने का मौका मिले तो मैं आप लोगों के पास आऊँ, दादी जी इसी तरह से मुझे आशीर्वाद देती रहें। ☺

जिन्दगी आसान है

– निशा गेरा, जनकपुरी, नई दिल्ली –

ज्ञान लेना और देना तो आसान है।
जो करे जीवन में धारण वही देव समान है।
जो चलता ज्ञान दिशा में वही तो महान है।
रहती उसके लबों पर हमेशा ही मुसकान है।
नहीं समझता जो ज्ञान को वही तो परेशान है।
जिन्दगी तो परिस्थितियों से भरा तूफान है।
तूफान को जो समझे तोहफा जीत जाता जहान है।
जब स्वमानों की अन्दर निरन्तर गूँजती तान है।
विषय सागर को पार करना तभी ही आसान है।
अन्दर है करुणा का गुण तभी तू इंसान है।
नहीं तो विकारों से भरा केवल तू हैवान है।
ज़िंदगी ईश्वर का दिया हुआ वरदान है।
प्यार से मुसकरा दिया कर ज़िंदगी आसान है।

बाबा ने बनाया सहनशील

ब्रह्माकुमारी ललिता,
सारणी (म.प्र.)

अप्रैल, 2013 की बात है, मैं और मेरे पति एक लौकिक रिश्तेदार के यहां कार्यक्रम में जा रहे थे। साथ में मेरी बहन, भैया और भाभी भी थे। पति और भैया दोनों बाइक से गये और हम तीनों बहनें बस से गये। गांव पहुँचकर बस से उतरकर हम तीनों ने ऑटो ले लिया। ऑटो में बैठे दो मिनट ही हुये थे कि ऑटो वाले का फोन बजा। वो बातें करने लगा और तेज गति से चलता हुआ ऑटो पुलिया के ऊपर की लोहे की रैलिंग से ज़ोर से टकराता हुआ, घिसटता हुआ आगे बढ़ने लगा। मैंने शिवबाबा को याद किया, उस समय आंखों के सामने एक तेज़ ज्योति आई। मैं अपने दोनों हाथों से ऑटो को मजबूती से पकड़े हुए थी। जैसे ही ऑटो रुका, मैंने बहनों को कहा, उतरो, हम दूसरे ऑटो से चलेंगे। वे दोनों उतर गईं लेकिन मुझसे उतरा ही नहीं जा रहा था। साड़ी उठाकर पैर देखा तो घुटने से लेकर पंजे तक वह फट गया था और पंजा तो रैलिंग की राड घुसने से छलनी हो गया था। उस अवस्था में भी मुझे उतना दर्द महसूस नहीं हो रहा था। मैंने बाबा से बातें करनी शुरू की, बाबा, यह क्या हो गया है, आपने कहा है, अचानक के पेपर में पास होना है। मैंने ऑटो वाले से कहा, भैया, मुझे हास्पिटल ले चलो।

धीरज नहीं खोया

दोनों बहनें मुझे देखकर जोर-जोर से रोने लगी। उनको कुछ भी नहीं लगा था। मेरे पैर से खून बहता जा रहा था। मैंने उसे हाथों से पकड़े रखा और धीरज नहीं खोया क्योंकि बाबा मेरे साथ था। ऑटो वाला हमें गांव के हॉस्पिटल में ले गया। मेरी हालत देखकर वहाँ का डॉक्टर घबरा गया। उसने फोन करके मेरे पति और भैया को खबर दी और पट्टियाँ लपेट कर खून बंद करने की कोशिश की लेकिन नाकाम रहा। उसने सारणी ले जाने के लिए कहा। मैं तो बाबा से बातें कर रही थी कि बाबा, यह जो कुछ भी हुआ है, ड्रामानुसार है, मेरा ही कोई बड़ा हिसाब-किताब चुक्ता हो रहा है और अब जो कुछ भी होगा, आप जानते हैं। आप मेरे साथ सदा रहना, मुझे पेपर में पास होना है। हम गाड़ी करके सारणी हास्पिटल में आये। वहाँ से मुझे पाढ़र हास्पिटल रैफर किया गया। वहाँ खून बहना बंद किया गया और आगे नागपुर रैफर कर दिया गया।

बाबा का सुन्दर स्वरूप देखा

नागपुर में जांच के तुरन्त बाद खून की कई बोतलें चढ़ाकर ऑपरेशन किया गया। जब मुझे ऑपरेशन थियेटर में ले जा रहे थे, तब मेरी आंखें खुली थी, सामने ब्रह्मा बाबा का स्वरूप देखा। एक तेज़ चक्र देखा, उसमें बाबा का इतना सुन्दर चेहरा देखा जो मैंने पहले कभी नहीं देखा था, न चित्रों में, न ही वीडियो में। मैं उस चेहरे को कभी भूल नहीं सकती। मैं तो इतनी खुश हो गई जैसे कि बाबा ही मेरा ऑपरेशन कर रहे हैं। मुझे कुछ भी डर नहीं लग रहा था। तीसरी बार सर्जरी हुई तब ऐसा लग रहा था कि बाबा मुझसे कह रहे हैं, बच्ची, हिम्मत रखना, सब कुछ ठीक हो जायेगा। इस प्रकार बाबा मेरे साथ रहे।

सहनशक्ति की तारीफ

ऑपरेशन के तीन माह बाद तक बेड रेस्ट के बाद धीरे-धीरे पैर चलने-फिरने लायक हो गया। हॉस्पिटल में डाक्टरों ने मेरी सहनशक्ति की सदा तारीफ की। वे दूसरे मरीजों को भी मेरा उदाहरण देकर शांत कर देते थे

कि देखो उस बहन को कितनी चोट लगी है फिर भी बिल्कुल शांत है। राजयोगी जीवन में शरीर से न्यारा होने का अभ्यास और बाबा का साथ हमें असीम सहनशक्ति प्रदान करता है, यह मैंने अनुभव किया। इन परिस्थितियों में मुझे ईश्वरीय परिवार से और लौकिक परिवार से भरपूर सहयोग मिला। मैं बापदादा का दिल से शुक्रिया करती हूँ कि उन्होंने सबको मेरा सहयोगी बना दिया। धन्यवाद करती हूँ दिल से ईश्वरीय परिवार का और निमित्त बहन का जिन्होंने विषम परिस्थितियों में भी मेरा उमंग-उत्साह बढ़ाया।

विकार का अनछुआ 'ऑपरेशन'

डॉ.सम्राट सुधा, रुड़की

'राखी बंधवाने के बदले हमें आपसे रुपये नहीं वरन् किसी विकार का दान (परित्याग) चाहिए। ध्यान रखिए, जो चीज़ दान में दी जाती है वह न आपके पास रह जाती है, न वापिस माँग सकते हैं...।' रुड़की (उत्तराखंड) के ब्रह्माकुमारीज़ सेवाकेन्द्र पर यह मेरा दूसरा दिन था। पर्व था रक्षाबन्धन और प्रवचन दे रही थी ब्र.कु.बहन। ब्रह्माकुमारी बहनों का हृदय कितना उच्च और उदार है, मेरे मन में यह आया। अज्ञात भय जो पिछले कुछ महीनों से दिन में एक या अधिक बार रह-रहकर हृदय में आ रहा था, रक्षाबंधन पर्व पर निमित्त बहन से राखी बंधवाकर लुप्त ही हो गया। जैसे शरीर का एक बड़ा फोड़ा बाबा की कृपा से बिना कोई निशान छोड़े व बिना पीड़ा के 'ऑपरेट' हो गया हो!! दीदियों का ऐसा निश्छल स्नेह, ऐसा अनोखा रक्षाबंधन-पर्व और विकार का ऐसा तत्क्षण समाधान, पूर्व में न हुआ था। बाबा ने मुझे अपना बना लिया।

सेवाकेन्द्र पर मुझे जो प्रसाद मिला उसमें श्रेष्ठता के वायब्रेशन थे। ग्रहण करते ही अद्भुत शान्ति की अनुभूति हुई। इसके बाद राजयोग की शिक्षा प्राप्त करने का सौभाग्य मिला। आत्मा क्या है, मन क्या है, तीन लोक कौन-से हैं, शिव और शंकर में अन्तर, मनुष्य के 84 जन्मों की अद्भुत कहानी आदि के सन्दर्भ में तार्किक जानकारी राजयोग पाठ्यक्रम से मिली। 'सृष्टि रूपी उल्टा व अद्भुत वृक्ष और उसके बीजरूप परमात्मा' अध्याय ने ज्ञानचक्षु खोल दिये।

अब अनवरत सायंकालीन मुरली (ईश्वरीय महावाक्य) क्लास में जा रहा हूँ। बाबा प्रत्येक शंका का समाधान 'मुरली' में देते हैं। याद की यात्रा, अपने दैनिक-चार्ट का स्मरण, जो बाबा पर फिदा होगा, उसे बाबा की शक्तियाँ मिलेंगी, संकल्प दृढ़ हो, सुजान होकर बैठना है, योग परफेक्शन के लिए है, हम आये हैं – हेल्थ, वेल्थ तथा हैपीनेस का वर्सा लेने, याद करने से विकर्म नाश होंगे, कुछ भी देना है, तो बाबा को याद करके देना है, बेगमपुर के बादशाह बनो, बाप को अपना वारिस बनाओ आदि अनेक सन्देश बाबा मुरली के माध्यम से प्रत्येक दिन देते हैं और मुरली के इन स्वरों से मेरा आत्म-पुष्प निरन्तर खिलता जा रहा है। कुछ स्वरचित पक्तियाँ इस प्रकार हैं –

आओ शिव से योग लगाकर, पायें अपना पुण्य रूप,
फिर ना होगी रात गहरी, और ना होगी चुभती धूप।
अविनाशी रुद्र ज्ञान यज्ञ में, कर दें हम विकारों को होम,
जग में गूंजे अनवरत, ओम् शान्ति ओम्।।

तबादला रद्द हो गया

ब्रह्माकुमार विश्वामित्र,
थाना सीकरी, जिला भरतपुर (राज.)

मुझ आत्मा को ज्ञान में आये दो साल हुये हैं। राजस्थान पुलिस में सर्विस करता हूँ। मेरी पत्नी रजनी, गीता पाठशाला में रोज़ मुरली (ईश्वरीय महावाक्य) सुनने जाती थी। वह मुझ आत्मा को घर आकर मुरली में बताये बाबा के महावाक्य सुनाती थी और राजयोग के बारे में बताती थी पर मुझ आत्मा को समझ में नहीं आते थे। जाति से ब्राह्मण होने के कारण सब धार्मिक ग्रंथ जैसे रामायण, गीता, महाभारत, पुराण आदि का अध्ययन मैंने कर रखा था और इन्हीं को ज्ञान समझ लिया था। सुबह-शाम सब देवी, देवताओं की आरती करता था, फिर भी मन में डर बना रहता था कि कोई देवता नाराज़ ना हो जाए। पत्नी मुझसे कहती थी कि आपको परमपिता परमात्मा शिव बाबा बुला रहे हैं, उनके पास सब प्रश्नों का जवाब है पर मैंने उनकी बातों पर कभी ध्यान नहीं दिया।

बाबा का बच्चा बनने का वायदा तुरन्त कर लिया

वर्ष 2011 में अचानक मेरा तबादला सीकरी से बाहर हो गया। अभी सीकरी आये मुझे एक साल ही हुआ था। मैं अपने परिवार को छोड़कर बाहर नहीं जाना चाहता था इसलिए परेशान हो गया। पत्नी को बताया तो कहने लगी, कोई बात नहीं, जो बाबा ने किया, अच्छा ही किया है। हम दोनों गीता पाठशाला सीकरी में गये, वहाँ ब्रह्माकुमारी बहन से मिले। हमने मुरली भी सुनी व योग भी किया। दीदी को बताया कि मन तो नहीं कर रहा परन्तु मजबूरन कल मुझे नये स्थान पर कार्यभार सम्भालना होगा। उन्होंने कहा, आपके लिए शिव बाबा के हम सब बच्चे, योग द्वारा शिव बाबा से निवेदन कर सकते हैं। बाबा कुछ भी कर सकते हैं पर आपको बाबा का बच्चा बनना होगा। मैंने मन में सोचा, तबादला रुकना तो है नहीं और तुरन्त वायदा कर लिया कि अगर मेरा तबादला रुक गया तो मैं बाबा का बच्चा बन जाऊँगा और बाबा की श्रीमत पर चलूँगा। सुबह जैसे ही मैं थाने पर गया तो साथियों ने बताया कि आपका तबादला रद्द हो गया है। मेरे को विश्वास नहीं हुआ। आदेश देखे तो यही थे। मैंने सोचा, ऐसा भी कभी होता है, बाबा क्या ऐसा भी कर सकते हैं? उसी दिन से मैं बाबा का बच्चा तो बन गया परन्तु अपनी शंका को दूर करने के लिए तबादले के निमित्त अधिकारी के पास गया। उनसे निवेदन कर पूछा कि तबादला रद्द होने का कारण क्या है। उन्होंने बताया कि मेरे मन में विचार आया कि जो कल विश्वामित्र का तबादला किया गया है, वह गलत है। फाइल मंगाकर उसे रद्द कर दिया। इसमें आपकी कोई सिफारिश नहीं आई थी।

कार्य के प्रति ईमानदारी

मुझ आत्मा ने मान लिया कि बाबा कुछ भी कर सकते हैं। इसके बाद गांव इमलाडी में, पोखर वाले मन्दिर में 60 आत्माओं के साथ मैंने सात दिन का कोर्स कर लिया। पहले तो मैं केवल जाति से ब्राह्मण था, अब कर्मों से भी ब्राह्मण बन गया। शास्त्रों में जो पढ़ा था उसका भी सही अर्थ पता चल गया। अब मैं रोज़ सुबह 4 बजे से 5 बजे तक राजयोग का अभ्यास करने लगा हूँ। सुबह 6 बजे से 7.30 बजे तक व शाम को 8 बजे से 9 बजे तक रोज़ाना मुरली सुनता हूँ। परमपिता परमात्मा की श्रीमत पर चल कर पूरी लगन व ईमानदारी से राजस्थान पुलिस में रह कम्प्यूटर ऑपरेटर की व अन्य ड्यूटी कर रहा हूँ। ज्ञान में आने के बाद आत्मा को पवित्र बनाने के लिए अपने मन, वचन व कर्म पर ध्यान दिया है। मन में निश्चित किया है कि किसी को भी गाली नहीं दूँगा व अपने काम के प्रति ईमानदार रहूँगा, अपने वेतन से ही परिवार का पालन व अन्य सेवा करूँगा। दो साल से मैंने किसी को भी गाली नहीं दी है व लोगों को समझाता हूँ कि गाली देना पाप है। दो

व्यक्ति जब झगड़ा करते हैं, वहाँ पर माँ, बहन, बेटी मौजूद नहीं होती, फिर भी हम उन्हें गाली देते हैं। अपराधी को सज़ा मिलनी चाहिये उसके परिवार को नहीं। जब से बाबा का बच्चा बना हूँ, मेरा जीवन ही बदल गया है। अब तो अमीर, गरीब, जाति, धर्म, लिंग का भेदभाव ना कर सबकी सेवा कर रहा हूँ। अब मैं अपने जीवन से सन्तुष्ट हूँ। जो पाना था वह मुझ आत्मा ने पा लिया है। मेरी सब भाई-बहनों से प्रार्थना है कि नौकरी करते हुए भी, ज्ञान में चल कर, अपने आप में सुधार लाकर हम मानव से देवता बन सकते हैं।

राक्षस व देवता में अन्तर

ईश्वरीय ज्ञान में आने के बाद समझ में आया है कि राक्षसों के चित्रों में उन्हें सींग, दांत, नाखून सहित भयंकर रूप वाले क्यों दिखाया जाता है। क्या कभी ऐसे राक्षस थे? अगर ऐसे होते तो ज़रूर आज भी उनका वंश होता। राक्षस व देवता आदतों और संस्कारों के कारण मानव के ही नाम हैं। सींग का मतलब है आक्रामक होना, बिना कारण के किसी पर हमला कर नुकसान पहुँचाना। लम्बे दांतों का मतलब है माँसाहारी होना, दाँतों से चीरफाड़ करने वाला होना। लम्बे नाखून का मतलब है चोरी, लूट करने वाला व लोगों की सुख, शान्ति छीनने वाला। देवता का मतलब है देने वाला। शिक्षा, प्रेरणा, सलाह, मदद व समय और परिस्थिति के अनुसार सहयोग देने वाला। देवता लेता नहीं है। जिस व्यक्ति में ये लक्षण हों वह देवता है। जिस व्यक्ति को आत्मज्ञान व परमात्मा का ज्ञान हो गया वह देवता है। जो देह अभिमान के कारण गलत कार्य करता है वह राक्षस है।

अहंकार का बोझ

ब्रह्माकुमार रामसिंह, रेवाड़ी

रामगोपाल और दौलतराम बचपन के मित्र थे। एक दिन बचपन में ही मनमुटाव के कारण उनमें बातचीत बन्द हो गई थी। इस बात को 35 वर्ष हो गए थे। इसी बीच दौलतराम गम्भीर रूप से बीमार पड़ गया। डॉक्टरों ने जवाब दे दिया। अस्पताल के बिस्तर पर लेटे-लेटे वह बीते जीवन के बारे में सोचता और अपने मित्र रामगोपाल के साथ छोटी-सी बात पर अहंकारवश हुए मनमुटाव की याद उसे सालती रहती। उसे लगा कि दिल पर बोझ लेकर मरना ठीक नहीं अत: मेल-मिलाप कर लेना चाहिए।

दौलतराम का सन्देश पहुँचा तो रामगोपाल मिलने चला आया। बीमार दौलतराम ने माफी मांगी तो मित्र ने भी अफसोस जताते हुए गिले-शिकवे भुला देने का भरोसा दिलाया। दोनों ने खूब बातें की। रामगोपाल विदा लेने लगा तो बीमार दौलतराम ने बिस्तर पर लेटे-लेटे ही चिल्लाकर कहा, रामगोपाल, एक बात याद रखना, अगर मेरी मौत न आई होती तो मैं माफी नहीं मांगता। सच ही कहा गया है, इन्सान दिल पर बोझ लेकर मरना नहीं चाहता किन्तु जिएगा बोझ ढोते-ढोते ही।

अहंकार बुद्धि के लिए विष है। वह त्रुटि और अपराधों का पोषण करता है। अहंकारी व्यक्ति सिर्फ पाना चाहता है, देना नहीं। वह अन्तत: भिखारी है। वासना, तृष्णा, राग, द्वेष, कलह आदि अहंकार की ही देन हैं। इसलिए अहंकारी ईश्वर से सदा दूर हटता जाता है। सूक्ष्म अहंकार भी मन की स्थिति को डाँवाँडोल करता है। अहंकार का बहिष्कार कर निश्छल-निर्मल जीवन जीने में सच्चा आनन्द है।

किसान दिवस
पर विशेष

फसल पर योग का प्रभाव

ब्रह्माकुमार राजू भाई से शाश्वत यौगिक खेती विषय पर दयाशंकर सोनकर की वार्ता

प्रश्नः- चारों ओर सेहत के लिए हाहाकार मचा हुआ है, मानव दुखी और अशान्त होकर घुट-घुटकर जीने को मजबूर है, क्या कारण है कि हज़ारों हॉस्पिटल और डॉक्टर होने के बावजूद बीमारियाँ दिन प्रतिदिन बढ़ती जा रही हैं?

उत्तरः- इसकी गहराई में जायें तो हम पायेंगे कि वर्तमान समय में हम जो अन्न खा रहे हैं, वो हमें उतना पोषण नहीं दे पा रहा जितना आवश्यक है। साथ ही धरती माँ की शक्ति भी क्षीण होती जा रही है। भूमि की उर्वराशक्ति बढ़ाने के लिए रासायनिक खादों व कीटनाशकों का प्रयोग हो रहा है जिससे उपज तो बढ़ी है लेकिन हानिकारक रसायनों के कारण पौष्टिकता में कमी आई है। यही वजह है कि स्वास्थ्य पर प्रतिकूल प्रभाव हो रहा है। धीरे-धीरे भूमि इतनी बंजर और निरुपजाऊ होती जा रही है कि आगे वहाँ घास भी नहीं उगेगी। कृषि वैज्ञानिकों के अनुसार फसलों को बढ़ाने के लिए जो संसाधन चाहिएँ वे उनकी जड़ों के पास पर्याप्त मात्रा में उपलब्ध होते हैं, ऊपर से कुछ भी देने की ज़रूरत नहीं होती क्योंकि भूमि स्वयं ही अन्नपूर्णा है। हमारी फसल भूमि से केवल 1.5 से 2 प्रतिशत ही लेती है बाकी तो वह हवा, पानी से लेती है इसलिए अतिरिक्त खाद डालने की ज़रूरत नहीं है। अकाल में जंगलों में कई वृक्ष हरे-भरे होते हैं तथा फलों से लदे होते हैं। जंगल में कहाँ भूमि की जुताई की जाती है, गोबर या रासायनिक खाद डाले जाते हैं, कौन-से कीटनाशक का छिड़काव होता है। बिना पानी, खाद, दवा के हर साल अनगिनत फल लगते हैं। वास्तव में भूमि में प्रचंड मात्रा में खनिज तत्व मौजूद हैं लेकिन ये उस स्थिति में नहीं होते कि जड़ें अवशोषित कर पाएं। इन्हें अवशोषित होने लायक बनाने का काम भूमि में रहने वाले असंख्य बैक्टिरिया करते हैं। जंगल की ज़मीन में ये प्रति एक ग्राम मिट्टी में लाखों से करोड़ों की संख्या में होते हैं, जो उर्वरता बनाए रखते हैं। लेकिन हमारे खेतों में रासायनिक खाद डालने के कारण भूमि के लाभदायक बैक्टिरिया समाप्त हो गये हैं। हमने उन्हें रासायनिक खाद, घासनाशक दवाओं आदि से नष्ट कर दिया है, इसका असर उत्पन्न होने वाले अनाज पर पड़ता है, जो रोगों का कारण बनता है। यदि हमें भूमि की उर्वरता पुनः बढ़ानी है तो अनंत कोटि लाभदायक बैक्टिरिया को पुनः स्थापित करना होगा।

प्रश्नः- इन लाभदायक बैक्टिरिया को स्थापित करने, जीवन को निरोग रखने तथा पैदावार बढ़ाने के लिए आप किस तरह की पद्धति अपनाने का सुझाव देते हैं?

उत्तरः- अनाज उत्पादन की कई पद्धतियां हैं जिनमें नैसर्गिक खेती, सेन्द्रिय खेती, रासायनिक खेती, जैव ऊर्जा खेती पद्धति आदि हैं। समय की पुकार है कि हम रासायनिक खेती की जगह जैविक खेती अपनाएं। जैविक खेती पूर्णतः प्रकृति से जुड़ी हुई है तथा रासायनिक खेती से अधिक किफ़ायती और लाभकारी सिद्ध हुई है। जैविक खेती का मुख्य आधार प्राकृतिक पदार्थ जैसे गाय का गोबर, गोमूत्र, विभिन्न वनस्पतियों के पत्ते आदि हैं। जैविक खेती में रासायनिक खाद और कीटनाशकों की जगह जैविक कीटनाशक तथा नैसर्गिक विधियां हैं, जो फसल के लिए अच्छी, लाभकारी तथा पूर्णतः प्राकृतिक हैं। आज

तक हमने जीवाणुओं को रसायनों से मार कर खेती की है, अब हमें जीवाणुओं को बढ़ाकर खेती करनी है। इसलिए हम अनुभव के आधार पर कुछ सफल प्रयोग आपके सामने प्रस्तुत कर रहे हैं जिनके चमत्कारिक प्रभाव देखने को मिले हैं। ऐसा ही एक प्रयोग है जिसे जीवामृत प्रयोग कहते हैं।

जीवामृत एक ऐसा प्रभावी मिश्रण है जिसमें करोड़ों लाभकारी जीवाणु होते हैं। जीवामृत अद्भुत प्रकार का जामन है, जैसे 100 लीटर दूध में एक चम्मच दही डाल दिया जाए तो कुछ घण्टों में सारा दूध दही में बदल जाता है वैसे ही जीवामृत के जीवाणु सारी भूमि में फैलते जाते हैं। जीवामृत भूमि में जो केंचुएं तथा अन्य जीव-जंतु होते हैं उन्हें आकर्षित कर ऊपर ले आता है, जोकि खेती के लिए लाभकारी हैं। ज़मीन को शक्तिशाली बनाने के लिए जीवाणुयुक्त जैविक खाद का इस्तेमाल करना बहुत ज़रूरी है इससे फसलों की उत्पादन क्षमता बढ़ती है एवं ज़मीन में नाइट्रोजन की मात्रा बढ़ने से फसल की रोग प्रतिकारक शक्ति में इज़ाफा होता है।

फसलों के संरक्षण के लिए पांच किलो नीम की हरी पत्तियाँ, पाँच लीटर गोमूत्र, 100 लीटर पानी, एक किलो देशी गाय के घी के साथ मिलाकर 24 घण्टे के लिए रख दें, दूसरे दिन रस छानकर छिड़काव करें। यह उपाय रस चूसने वाले कीटों तथा छोटी इल्लियों पर कारगर रहा है।

प्रश्नः- तन के साथ मन भी स्वस्थ हो इसके लिए ग्राम विकास प्रभाग द्वारा संचालित नये युग का नया कदम क्या है?

उत्तरः- प्राचीन काल से ही कहा जाता है कि अन्न का मन पर प्रभाव पड़ता है और मन का स्वास्थ्य और रोगों से गहरा सम्बन्ध है। कहते हैं, जैसा अन्न वैसा मन और जैसा मन वैसा तन। एक समय ऐसा था, मानव निरोगी तथा दैवी गुणों से सम्पन्न था, उस समय के भारत को सोने की चिड़िया, स्वर्ग भूमि नाम से आज भी याद करते हैं। परन्तु कालचक्र का पहिया घूमेगा ही। स्वर्णिम सतयुगी दुनिया के बाद त्रेता-युग, द्वापरयुग, कलियुग आए। वर्तमान समय सृष्टि का तमोप्रधान स्वरूप विकट परिस्थितियां लेकर खड़ा है। धरती पर उपलब्ध सभी पदार्थ दूषित, दुखदाई, विषैले हो गये हैं और इसका मुख्य कारण है मानव मन का विषैला होना। प्रकृति मानव की अनुगामिनी है। प्रजापिता ब्रह्मा-कुमारी ईश्वरीय विश्व विद्यालय तथा उसकी सहयोगी संस्था राजयोग एज्यूकेशन एण्ड रिसर्च फाउण्डेशन के ग्राम विकास प्रभाग द्वारा भारत के किसान भाई-बहनों को ''शाश्वत यौगिक खेती'' के विषय में जागृत किया जा रहा है। उसके परिणामस्वरूप कम खर्च में अच्छी फसल प्राप्त हो रही है। यह नये युग के लिये नया कदम है।

प्रश्नः- शाश्वत यौगिक खेती क्या है? इसके तरीके एवं लाभ बताएं?

उत्तरः- यह एक अनोखा विज्ञान है। राजयोग के अभ्यास से पाँचों तत्वों (पृथ्वी, अग्नि, वायु, जल तथा आकाश), ग्रहों, तारों, जीव-जंतुओं को परमात्मा की शक्ति का प्रकंपन देकर यौगिक खेती पद्धति में इनका सहयोग लेते हैं जिससे वनस्पतियाँ बढ़ती हैं तथा उत्पादन मिलता है। मन ही मन उनसे बातें करते हैं कि अब तक हमने आपको जो दुःख दिया इसके लिये माफी मांगते हैं और आज के बाद आपके नियम में कोई बाधा नहीं डालेंगे। इस भावना से चैतन्य ऊर्जा के प्रकंपन से प्रकृति सतोप्रधान, सुखदाई बनती है।

डॉ.रुडाल्फ स्टाइनर ने कहा है कि इस सृष्टि में जो भी जीव-जंतु, ग्रह, तारे हैं, सब ब्रह्माण्ड की शक्ति से जुड़े हैं। उन्होंने इस बात को स्पष्ट किया है कि ज़मीन की उर्वरा शक्ति को ब्रह्माण्ड की शक्ति द्वारा प्रेरित करके उत्पादन और गुणवत्ता बढ़ा सकते हैं। इसके लिए सुबह पहले प्रकृति को 20 मिनट, फिर ज़मीन को 10 मिनट प्रकंपन देते हैं, इससे ज़मीन में जो जीवाणु होते हैं उनकी कार्यक्षमता बढ़ती है लेकिन इन जीवाणुओं की संख्या बढ़ाने के लिये जैविक खाद का इस्तेमाल भी करते हैं।

जीव वैज्ञानिक सर जगदीशचन्द्र बसु ने भी इस बात को

स्पष्ट किया है कि कैसे वनस्पति विचारों को समझती है तथा प्रतिक्रिया देती है। उन्होंने ऑप्टिकल पल्स रिकॉर्डर मशीन द्वारा सिद्ध किया कि जब बाहर से किसी प्रकार की ऊर्जा पौधों को स्पर्श करती है तो उसका विद्युत ऊर्जा में परिवर्तन होता है। वह ऊर्जा सकारात्मक होती है तो पौधों की कार्यक्षमता गतिमान होती है, अगर वही ऊर्जा नकारात्मक होती है तो पौधे घबराते हैं। उनकी प्रतिकार क्षमता कम होती है, उत्पादन भी कम होता है। सर जगदीशचन्द्र बसु के प्रयोग को आगे बढ़ाते हुए क्लीव बॅक्स्टर नाम के संशोधक ने कैलिफोर्निया में बहुत ही स्पष्ट रूप से विस्तारित किया कि अपनी सोच का असर पौधों पर किस प्रकार होता है। आज खेती करते समय किसान व्यसन करता है, जब किसी समस्या से घबरा जाता है या देह अभिमान के कारण उसके मन में जो भी विचार चलते हैं उनका बुरा परिणाम फसल पर होता है। ज़मीन तैयार करते समय यदि ट्रैक्टर में अश्लील गीत बजाते हैं तो उनका भी गलत असर होता है। उस समय हमें भगवान को याद करने वाले गीत बजाने चाहिएं। चेन्नई की अन्नामलाई यूनिवर्सिटी के डॉ.टी.सी.सिंह ने फसल में बांसुरी, वीणा, तबला आदि बजाकर उत्पादन में 20 प्रतिशत की वृद्धि की।

प्रश्न:- आपका ग्राम विकास प्रभाग गांवों के विकास के लिए क्या योगदान दे रहा है?

उत्तर:- हमारा विज़न है देश को स्वर्णिम गांव बनाना। यह अनुभव किया गया है कि नैतिक और आध्यात्मिक मूल्यों की कमी के कारण गांवों में अन्धविश्वास, जातीय भेदभाव, दुर्व्यसन, लड़ाई-झगड़े और मुकदमेबाज़ी बढ़ रहे हैं। शिक्षा के अभाव में बीमारियों से ग्रसित हैं इसके लिए ग्राम विकास प्रभाग ने चार सूत्रीय कार्यक्रम 1- स्वच्छता 2- साक्षरता 3- सुस्वास्थ्य 4- आत्म-निर्भरता शुरू किया है। इसमें संस्था के सदस्य गांवों में कैंप लगाकर लोगों को जागरूक करते हैं। इसके अलावा भारत के गाँवों को विकसित करने के लिए हरित क्रांति, श्वेत क्रांति और आध्यात्मिक क्रांति अभियान शुरू किया गया है। हमारा मानना है कि आध्यात्मिक शक्ति को जीवन में लाने से सर्व समस्यायें हल होंगी तथा यह भारत, स्वर्णिम भारत के रूप में उभरेगा।

प्रश्न:- शाश्वत खेती कहाँ और कौन कर रहे हैं तथा उन्हें क्या लाभ हुए हैं?

उत्तर:- गुजरात में दांतीवाड़ा कृषि विश्वविद्यालय तथा उत्तराखण्ड में पंत नगर कृषि विश्वविद्यालय में शाश्वत यौगिक खेती पर विशेष शोध कार्य चल रहा है। पंत नगर कृषि विश्वविद्यालय की प्रो.डॉ.सुनीता पांडे ने बताया कि हमारे विचारों का प्रभाव जल तत्व पर बहुत शीघ्र पड़ता है। हम पानी को योग से वायब्रेशन देकर शक्तिशाली बनाएं और उसका प्रयोग करें तो फसल अच्छी हो सकती है। इस पद्धति का प्रयोग महाराष्ट्र,आंध्र प्रदेश,पंजाब एवं उत्तर प्रदेश के कुछ जिलों में किया जा रहा है। महाराष्ट्र के सांगली जिले में कवठेपिरान गांव में शंकर दत्त माली नाम का किसान है। उनकी खेती तथा उसके चारों ओर की 200 एकड़ ज़मीन बंजर थी जिस पर कोई फसल नहीं आती थी। ऐसी खारयुक्त ज़मीन में उस किसान ने यौगिक खेती का सफलतम् प्रयोग किया। आज उसे 40 से 50 टन प्रति एकड़ गन्ना उत्पादन मिल रहा है। इसके साथ ही ज़मीन बहुत शक्तिशाली हो गई है। उसने खेती के चारों ओर नीम के पेड़ लगाये हैं जिन पर पक्षी आकर बैठते हैं। सारे जीव-जंतु कुदरत की ऐसी देन हैं जो बिना पैसे के दिन-रात काम कर रहे हैं और फसल बढ़ा रहे हैं, यह प्रत्यक्ष मॉडल देखकर वहाँ के ही अन्य 10 किसान भी अपनी खेती यौगिक पद्धति से करने लगे हैं। चार साल में जमीन का सेन्द्रिकरण 04 से 1.22 हो गया है। यह बहुत बड़ी उपलब्धि है।

☺

ब्र.कु. आत्मप्रकाश, सम्पादक, ज्ञानामृत भवन, शान्तिवन, आबू रोड द्वारा सम्पादन तथा ओमशान्ति प्रिन्टिंग प्रेस, शान्तिवन -307510, आबू रोड में प्रजापिता ब्रह्माकुमारी ईश्वरीय विश्व विद्यालय के लिए छपवाया। संयुक्त सम्पादिका - ब्र.कु. उर्मिला, शान्तिवन
E-mail : omshantipress@bkivv.org, gyanamritpatrika@bkivv.org Ph. No. : (02974) - 228125

1. शान्तिवन (आबू रोड)- राजयोगिनी दादी रतनमोहिनी जी, संस्था द्वारा शिव-संदेश दिवस पर वर्ल्ड रिकॉर्ड कायम करने का प्रमाण-पत्र देकर सम्मानित करते हुए वर्ल्ड रिकार्ड ऑफ इंडिया के अध्यक्ष भ्राता पवन सोलंकी। साथ में ब्र.कु.मृत्युंजय भाई तथा ब्र.कु.गंगाधर भाई।

2. किशनगढ़- किशनगढ़ की महारानी मिनाक्षी देवी को ईश्वरीय सौगात देते हुए राजयोगिनी दादी रतनमोहिनी। साथ में ब्र. कु. कमलेश बहन।

3. कुरुक्षेत्र- कुरुक्षेत्र विश्वविद्यालय के कुल सचिव डॉ. कृष्ण चन्द रलहन को ईश्वरीय सौगात देते हुए ब्र.कु.उर्मिला बहन, ब्र. कु. सरोज बहन तथा अन्य।

4.अमरावती- महाराष्ट्र के समाजकल्याण मंत्री भ्राता शिवाजीराव मोघे, ब्र.कु.सीता बहन को व्यसनमुक्ति अभियान के उपलक्ष्य में अवॉर्ड देते हुए। साथ में ब्र.कु.सनाम।

5.पडधरी (राजकोट)- गुजरात के वित्त, स्वास्थ्य तथा परिवार कल्याण मंत्री भ्राता नितीन पटेल को ईश्वरीय सौगात देते हुए ब्र.कु.काजल बहन।

6.पोखरा (नेपाल)- नेपाल के सूचना और संचार मंत्री भ्राता मिनेन्द्र रिजल को ईश्वरीय सौगात देते हुए ब्र.कु.शैलेश भाई तथा ब्र.कु.शोभा बहन।

7.भुवनेश्वर (युनिट-९, ओम निवास)- राजयोगिनी दादी सन्देशी के निमित्त श्रद्धांजलि कार्यक्रम में ईश्वरीय सन्देश देते हुए ब्र.कु.गीता बहन। मंचासीन हैं उड़ीसा विधानसभा के पूर्व उपाध्यक्ष भ्राता बी.बी.सिंह मर्दाराज, बी.एस.एन.एल.के सी.जी.एम.भ्राता एन.के.भोई, ब्र.कु.शीलू बहन, ब्र.कु.मधु बहन तथा अन्य।

8.मथुरा- आध्यात्मिक चित्र प्रदर्शनी का उद्घाटन करते हुए विश्व हिन्दू परिषद के अन्तर्राष्ट्रीय आयोजन-सचिव भ्राता दिनेश, विधायक भ्राता जगन प्रकाश गर्ग, ब्र.कु.कुसुम बहन, ब्र.कु.कमलेश बहन तथा अन्य।

9.इंदौर (ओमशांति भवन)- 'सात अरब सत्कर्मों की महायोजना' कार्यक्रम का दीप जलाकर उद्घाटन करते हुए ब्र.कु.रामप्रकाश भाई, उद्योगपति भ्राता रमेश मित्तल, राष्ट्रीय नेत्र सुरक्षा संस्थान के अध्यक्ष डॉ.एम.सी.नाहटा, ब्र.कु.हेमलता बहन तथा समाजसेवी भ्राता अनिल भंडारी।

10.अहमदाबाद (नवरंगपुरा)- दिव्य गीत स्पर्धा के समापन कार्यक्रम में विजेताओं को पुरस्कृत करने के बाद उनके साथ राजयोगिनी दादी रतनमोहिनी, ब्र.कु.चन्द्रिका बहन, ब्र.कु.इशिता बहन तथा इंडियन आयडल गायक भ्राता विशाल कोठारी।

RNI No.10563/1965, Postal Regd. No.RJ/SRO/9559/2012-2014 Posting at Shantivan-307510 (Abu Road)
Licensed to post without prepayment No. RJ/WR/WPP/002/2013-2014. Published on 25th of each Month &
Posted on 1st to 6th of each month. Price 1 copy Rs. 8.50, Issue : December, 2014.

1.शान्तिवन (आबू रोड)- 'परमात्म शक्ति द्वारा महापरिवर्तन का समय' विषयक अंतर्राष्ट्रीय महासम्मेलन का उद्घाटन करते हुए राजयोगिनी दादी हृदयमोहिनी, राजयोगिनी दादी जानकी, राजयोगिनी दादी रत्नमोहिनी, बिहार उच्च न्यायालय के न्यायाधीश भ्राता समरेन्द्र प्रताप सिंह, ब्र.कु.निर्वैर भाई तथा नेपाल के पूर्व मुख्य न्यायाधीश भ्राता हरी प्रसाद गौतम, ब्र.कु.मृत्युंजय भाई, ब्र.कु.मोहिनी बहन, ब्र.कु.मुन्नी बहन तथा अन्य।

2.दिल्ली (कृष्णा नगर)- 'परमात्म शक्ति द्वारा महापरिवर्तन का समय' विषयक कार्यक्रम का उद्घाटन करते हुए राजयोगिनी दादी कमलमणि जी, विधायक भ्राता जितेन्द्र सिंह शंटी, ब्र.कु. बृजमोहन भाई, ब्र.कु. आत्म प्रकाश भाई, ब्र.कु. आशा बहन, ब्र.कु. लक्ष्मण भाई एवं अन्य।

3.शान्तिवन (आबू रोड)- 'परमात्म शक्ति द्वारा महापरिवर्तन का समय' विषयक अंतर्राष्ट्रीय महासम्मेलन में मंच पर उपस्थित हैं ब्र.कु.कमला बहन, राजयोगिनी दादी रत्नमोहिनी, छ.ग.के राज्यपाल महामहिम भ्राता बलराम दास टंडन, ब्र.कु.ओमप्रकाश भाई तथा ब्र.कु.मृत्युंजय भाई।

4.नागपुर- महाराष्ट्र के नवनिर्वाचित मुख्यमंत्री भ्राता देवेन्द्र फडणवीस को ईश्वरीय सौगात देते हुए ब्र.कु.पुष्पारानी बहन तथा ब्र.कु.प्रेम भाई।

5.दिल्ली- 'परमात्म शक्ति द्वारा महापरिवर्तन का समय' विषयक कार्यक्रम का उद्घाटन करते हुए जस्टिस वी.ईश्वरैय्या, अध्यक्ष, पिछड़ा वर्ग के लिए राष्ट्रीय आयोग, ब्र.कु. बृजमोहन भाई, बहन किरण चोपड़ा, अध्यक्ष, सीनियर सीटीजन केसरी क्लब, ब्र.कु शिवानी बहन एवं ब्र.कु. चक्रधारी बहन।